विश्वकर्मा फर्नीचर
मो. 98261-32636,90987-54366,98274-96911

तरुण छत्तीसगढ़

e-Paper- tarunchhattisgarhkorba.com
कोरबा एवं रायपुर से एक साथ प्रकाशित डाक पंजीयन क्रमांक- जी2-112/सी.जी/बीएलपी/003/2024-2026

सुनालिया ज्वेलर्स
हीरा, स्वर्ण, हॉलमार्क ज्वेलरी, रजत, राशि नग के विक्रेता
मो. 94255-32524,94241-43922
पावर हाउस रोड, कोरबा

वर्ष 36 अंक 96 | कोरबा, सोमवार , दिनांक 06 जनवरी 2025 डाक 07 जनवरी 2025 | पृष्ठ : 8 मूल्य 2.00 रुपए

विविधा
मुख्यमंत्री मोहन यादव उज्जैन के मुंगी चौराहे पर राहगीरी आनंद उत्सव के उद्घाटन के दौरान घोड़े पर सवार हुए

देश-विदेश
कैसे बढ़े रोजगार : उद्योग संगठन ने केंद्र सरकार को दिए ये सात सुझाव

फीचर
गौरघाट जलप्रपातः कोरिया जिले का स्वर्गिक सौंदर्य

भारत पहुंचा एचएमपीवी वायरस,बंगलूरू में आठ महीने की बच्ची में दिखे संक्रमण के लक्षण, अलर्ट

नईदिल्ली, 06 जनवरी [एजेंसी]।

चीन में कोरोना के बाद अब HMPV Virus आतंक मचा रहा है। वायरस तेजी से फैल रहा है, जिसके चलते कई देश अलर्ट मोड पर है। अब इस वायरस का भारत में भी पहला केस मिल गया है। इंडिया टूडे की रिपोर्ट के अनुसार, बेंगलुरु के एक अस्पताल में 8 महीने के बच्चे में HMPV Virus पाया गया है। बच्चे को बुखार के कारण अस्पताल में भर्ती कराया गया। भारत सरकार भी इसको लेकर सतर्क है और एडवाइजरी भी जारी हो चुकी है। वायरस का पता लगने के बाद स्वास्थ्य विभाग ने कहा कि उनकी लैब में इसका पता नहीं चला है, एक निजी अस्पताल में ये मामला सामने आया। HMPV Virus के ज्यादार मामले छोटे बच्चों में ही मिलते हैं। चीन में भी ये बच्चों में ही मिल रहा है। बताया गया है कि भारत में यह पहला मामला कर्नाटक के बंगलूरू में दर्ज किया गया है। इस केस के सामने आने के बाद एहतियात के तौर पर कर्नाटक सरकार ने बैठक भी बुला ली है। इस बीच चीन में एचएमपीवी के अलावा कुछ और वायरस के भी फैलने की खबरें हैं। इनमें इन्फ्लुएंजा ए, माइकोप्लासमा न्यूमोनिए और कोरोनावायरस के दोबारा फैलने से जुड़े दावे शामिल हैं। इसके अलावा कुछ अपुष्ट दावे हैं कि चीन ने स्थिति की गंभीरता को देखते हुए आपातकाल लगा दिया है। खासकर एचएमपीवी वायरस, जिसके लक्षण कोरोनावायरस संक्रमण के जैसे ही हैं को लेकर स्वास्थ्य अधिकारियों ने निगरानी बढ़ा दी है। मौजूदा समय में ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस से बचाव के लिए कोई टीका (वैक्सीन) मौजूद नहीं है। इसके अलावा एंटी वायरल दवाइयों का प्रयोग इस पर असर नहीं डालता। ऐसे में एंटी वायरल का प्रयोग इंसानों में प्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने का काम कर सकता है।

इस वायरस से जूझ रहे लोगों को लक्षण हल्का करने के लिए कुछ दवाएं दी जा सकती हैं। हालांकि, वायरस को खत्म करने लायक उपचार अभी मौजूद नहीं है। 2023 में एचएमपीवी के कई मामले नीदरलैंड, ब्रिटेन, फिनलैंड, ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, अमेरिका और चीन में दर्ज किए गए हैं। बीजिंग की कैपिटल मेडिकल यूनिवर्सिटी के यूआन अस्पताल में श्वसन और संक्रामक रोग विभाग के मुख्य चिकित्सक ली तोंगजेंग के मुताबिक, मास्क पहनने, हाथों को लगातार धोने और प्रतिरोधक क्षमता बनाए रखने से बीमारी से राहत मिल सकती है।

43 लोग हिरासत में, 15 गाड़ियां भी जब्त, डीएम ने बताया क्यों पीके पर प्रशासन हुआ सख्त

पटना। बिहार में BPSC की परीक्षा में हुई गड़बड़ी को लेकर प्रदर्शन कर रहे अभ्यर्थियों के समर्थन में पटना के गांधी मैदान में आमरण अनशन पर बैठे जन सुराज पार्टी (जसुपा) के सूत्रधार प्रशांत किशोर (पीके) को पुलिस ने सोमवार को गिरफ्तार कर लिया। सोमवार की सुबह करीब 3-4 बजे के बीच में पुलिस ने उन्हें हिरासत में लिया था। इसके बाद उन्हें इलाज के लिए एम्स पटना में भर्ती कराया गया। एम्स, पटना कर बाहर उनके समर्थकों की भीड़ लग गई थी।

समर्थक एंबुलेंस को अंदर जाने नहीं दे रहे थे। काफी संख्या में महिला समर्थक भी थीं। पुलिस ने हल्का बल प्रयोग कर एंबुलेंस को अंदर ले जाने में सफल रही। जानकारी के अनुसार, प्रशांत किशोर ने किसी भी तरह की जांच और अनशन तोड़ने से इनकार कर दिया है। वहीं डॉक्टरों ने प्रारंभिक जांच में किसी भी तरह की चिंता की बात से इनकार किया है।

सीएम योगी 11 जनवरी को करेंगे अभिषेक देश भर के 170 संत-धर्माचार्य होंगे शामिल

अयोध्या 06 जनवरी। रामलला के विग्रह की प्राणप्रतिष्ठा के एक वर्ष पूर होने पर वार्षिक समारोह प्रतिष्ठा द्वादशी के रूप में मनाया जाएगा। 11 से 13 जनवरी तक विभिन्न आयोजनों के माध्यम से रामलला के प्रति श्रद्धा अर्पित की जाएगी। सीएम योगी आदित्यनाथ 11 जनवरी को 11 बजे रामलला का अभिषेक करेंगे। इस दिन वे सात घंटे अयोध्या में रहेंगे। समारोह में देशभर के 170 संत-धर्माचार्य मेहमान के रूप में शामिल होंगे। अयोध्या के 37 जातीय मंदिरों के संत-महंत भी आमंत्रित किए गए हैं। अंगद टीला परिसर में पत्रकारों से बातचीत में श्रीराम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र के महासचिव चंपत राय ने प्रतिष्ठा द्वादशी के त्रिदिवसीय आयोजन की जानकारी दी। चंपत राय ने बताया कि उत्तराखंड, छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात, मध्य प्रदेश व उत्तर प्रदेश से संत-धर्माचार्यों को आमंत्रित किया गया है। तीन दिनों तक होने वाले कार्यक्रमों में उषा मंगेशकर, कुमार विश्वास, मालिनी अवस्थी अनुराधा पौड़वाल, कविता पौड़वाल, स्वाति मिश्रा, कथक नृत्यांगना शोभना नारायण प्रस्तुति देंगे।

बस के साथ हो गया बड़ा हादसा, 4 यात्रियों की गई जान, मची चीख पुकार

इडुक्की। केरल के इडुक्की जिले के मुंडक्कयम में KSRTC की एक बस के साथ हादसा हो गया। यात्रियों से भरी बस खाई में गिर जाने से चार यात्रियों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए। हादसे का शिकार हुई बस में 34 यात्री और तीन कर्मचारी सवार थे। सभी यात्री मवेलिक्कारा इलाके के रहने वाले थे। KSRTC की बस तमिलनाडु के तंजावुर में टूर लेकर मवेलिकरा लौट रही थी। यह हादसा आज यानी सोमवार सुबह करीब 6.15 बजे हुआ। जानकारी के मुताबिक, बस ने एक मोड़ पर नियंत्रण खो दिया और 30 फीट गहरी खाई में जा गिरी। हादसे के बाद मौके पर रेस्क्यू ऑपरेशन चलाया गया। पुलिस ने बताया, सोमवार को तड़के पहाड़ी जिले में पुल्लुपारा के पास एक सरकारी बस के खाई में गिर जाने से एक महिला सहित तीन लोगों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए। उन्होंने बताया कि बस 34 यात्रियों को लेकर तमिलनाडु के तंजावुर की यात्रा के बाद अलप्पुझा जिले के मावेलिकरा लौट रही थी, तभी सुबह करीब छह बजे यह हादसा हुआ। उन्होंने आगे बताया कि मृतकों के शवों को मुंडाकायम के एक प्राइवेट हॉस्पिटल में भेज दिया गया है और पोस्टमार्टम के बाद उन्हें परिजनों को सौंप दिया जाएगा। अधिकारियों ने बताया कि बचाव अभियान के लिए पुलिस और अग्निशमन एवं बचाव सेवा कर्मियों को तुरंत तैनात किया गया।

भारत जोड़ो यात्रा के बाद हरियाणा में संविधान बचाओ रैलियां करेगी कांग्रेस, सैलजा-सुरजेवाला गुट नहीं होगा शामिल

- प्रदेश अध्यक्ष ने जारी किया 26 जनवरी तक का कार्यक्रम, कमेटियों का गठन जल्द
- सैलजा व सुरजेवाला गुट द्वारा अलग से कार्यक्रम कराए जाने की संभावना

चंडीगढ़, 06 जनवरी [एजेंसी]।

हरियाणा के प्रमुख विपक्षी दल कांग्रेस ने राज्य में संविधान बचाओ रैलियां और पदयात्राएं करने का निर्णय लिया है। गुटों में बंटी कांग्रेस यह रैलियां 26 जनवरी तक प्रदेश के सभी ब्लाक अथवा विधानसभा स्तर पर आयोजित करेगी। पूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा गुट की ओर से इन रैलियों व पदयात्राओं के आयोजन का कार्यक्रम घोषित किया गया है। कांग्रेस महासचिव कुमारी सैलजा और रणदीप सिंह सुरजेवाला गुट हुड्डा खेमे के साथ इन रैलियों व पदयात्राओं में शामिल नहीं होगा। सैलजा व सुरजेवाला गुट द्वारा अलग से इनके कार्यक्रम घोषित करने की संभावना है। हरियाणा कांग्रेस के अध्यक्ष चौधरी उदयभान ने अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के निर्देश पर संविधान बचाओ रैलियों का कार्यक्रम जारी किया है। उदयभान के अनुसार 26 दिसंबर को कर्नाटक में हुई कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक के बाद 27 दिसंबर को एक रैली के साथ जय बापू, जय भीम, जय संविधान अभियान की शुरूआत होनी थी। साल 1924 में हुए कांग्रेस के बेलगावी अधिवेशन के 100 साल पूरे होने पर 26 और 27 दिसंबर को पार्टी ने विशेष अधिवेशन रखा था। पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन के कारण इसे रोक दिया गया था। औपचारिक रूप से अभियान की शुरुआत हो चुकी है, लेकिन इसका समापन 26 जनवरी को डॉ. भीमराव आंबेडकर की जन्मस्थली मध्य प्रदेश के महू में होगा।

अभियान के बारे में कांग्रेस के प्रदेश अध्यक्ष ने बताया कि महात्मा गांधी की विरासत और संविधान को बचाने के लिए हर ब्लाक, जिले और राज्य में रैलियां की जानी हैं। जरूरत पड़ने पर अभियान 26 जनवरी के बाद भी जारी रह सकता है। उदयभान ने प्रदेश कांग्रेस के सभी पदाधिकारियों, विधायकों व सांसदों के नाम लिखे पत्र में कहा है कि प्रदेश भर में जिला व ब्लाक स्तर पर रैलियों का आयोजन किया जाए व मार्च निकाले जाएं, जिसके माध्यम से संवैधानिक मूल्यों को सुरक्षित करने के प्रति सामूहिक प्रतिबद्धता को मजबूत किया जा सकेगा।

लीवर के 4 टुकड़े, सिर में 15 फ्रैक्चर ... पत्रकार मुकेश चंद्राकर की पोस्टमार्टम रिपोर्ट में कई खुलासे

रायपुर, 06 जनवरी [एजेंसी]।

छत्तीसगढ़ के बीजापुर में पत्रकार मुकेश चंद्राकर की हत्या में क्रुरता की सारी हदें पार कर दी गईं। मुकेश चंद्राकर के सिर पर चोट के 15 निशान मिले हैं। इसके अलावा लीवर के चार टुकड़े और पांच पसलियों को तोड़ा गया। इतना ही नहीं उसकी गर्दन टूटी और हार्ट फटा हुआ पाया गया है। जिस डॉक्टर ने पत्रकार मुकेश चंद्राकर की बॉडी का पोस्टमार्टम किया, उन्होंने कहा कि मैंने अपने 12 साल के करियर में ऐसा केस नहीं देखा, जिसकी इतनी बेरहमी से हत्या की गई हो। उन्होंने ये भी दावा किया है कि पत्रकार की हत्या करने वाले दो या दो से ज्यादा हमलावर हैं। मुकेश चंद्राकर की हत्या के आरोपी ठेकेदार सुरेश चंद्राकर को गिरफ्तार कर लिया गया है। एसआईटी ने उसे हैदराबाद से अरेस्ट किया है। बीजापुर के एसपी जितेंद्र सिंह यादव ने इसकी पुष्टि करते हुए कहा कि आरोपी को हैदराबाद से गिरफ्तार किया गया है। मुकेश चंद्राकर का शव तीन जनवरी को ठेकेदार सुरेश चंद्राकर की प्रॉपर्टी पर स्थित सेप्टिक टैंक से बरामद हुआ था। मुकेश एक जनवरी से लापता थे। पुलिस ने मुकेश की तलाश के लिए सुरेश चंद्राकर के घर पर छापा मारा था। जांच के दौरान वहां सेप्टिक टैंक से एक शव बरामद हुआ। शव की हालत काफी खराब थी, लेकिन कपड़ों से उसकी पहचान पत्रकार मुकेश चंद्राकर के रूप में हुई।

पत्रकार मुकेश चंद्राकर ने ठेकेदार सुरेश चंद्राकर के करप्शन को उजागर किया था। ठेकेदार सुरेश चंद्राकर को बस्तर में 120 करोड़ की सड़क बनाने का ठेका मिला था। पत्रकार मुकेश की हत्या की खबर के बाद ठेकेदार के खिलाफ जांच का आदेश दिया गया था।

एसआईटी अफसर का सुरेश चंद्राकर की गिरफ्तारी पर बयान

बीजापुर। जिले के पत्रकार मुकेश चंद्राकर की हत्या का मुख्य आरोपी और इस हत्याकांड का मास्टरमाइंड सुरेश चंद्राकर पकड़ा गया है। एसआईटी ने कल देर रात हैदराबाद से इसे गिरफ्तार किया है। फिलहाल इससे पूछताछ की जा रही है। ये पत्रकार मुकेश चंद्राकर का चचेरा भाई है। इस हत्याकांड में शामिल 3 सगे भाइयों समेत चार आरोपी पकड़े जा चुके हैं। दरअसल, सुरेश चंद्राकर ठेकेदार है। राजनीति से भी जुड़ा हुआ है। मुकेश चंद्राकर ने ठेकेदार की भ्रष्टचार की खबर बनाई थी। इसी बात से नाराज था। इसके बाद इसने मुकेश की हत्या करवाने की पूरी साजिश रची। अपने बैडमिंटन कोर्ट परिसर में इसने अपने भाई और सुपरवाइजर के हाथों मरवा दिया।

चंडीगढ़ के सेक्टर-17 में जमींदोज हुई बिल्डिंग

चंडीगढ़। चंडीगढ़ के सेक्टर-17 मार्केट इलाके में एक इमारत ढह गई। इस बिल्डिंग पर पहले महफिल होटल चल रहा था। बिल्डिंग में दरारें आने से इसे पहले ही खाली करवा कर बंद कर दिया गया था। कोई जान माल का नुकसान नहीं है लेकिन आसपास की बिल्डिंग पर कुछ असर पड़ा है। सेक्टर- 17 में इससे पहले भी बिल्डिंग गिरी थी।

पालघर में 3.7 तीव्रता का भूकंप

पालघर 06 जनवरी। महाराष्ट्र के पालघर जिले में सोमवार सुबह 3.7 तीव्रता का भूकंप आया। अधिकारियों ने यह जानकारी दी। अधिकारियों ने बताया कि किसी के हताहत होने या संपत्ति के नुकसान की कोई सूचना नहीं है। जिला आपदा प्रबंधन प्रकोष्ठ के प्रमुख विवेकानंद कदम ने एक आधिकारिक रिपोर्ट का हवाला देते हुए कहा कि भूकंप तड़के चार बजकर 35 मिनट पर डहाणू तालुका में आया।

शाहजहांपुर में कोहरे के कारण हादसा नेपाल से चंडीगढ़ जा रही बस ईंटों से भरी ट्रॉली से टकराई, 16 यात्री घायल

शाहजहांपुर। नेपाल से चंडीगढ़ जा रही बस कोहरे में सड़क किनारे खड़ी ईंटों से भरी ट्रॉली से टकरा गई। जिससे बस में सवार 16 यात्री घायल हो गए जिन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया। कल देर रात नेपाल के कृष्णानगर बढ़नी बॉर्डर से एक बस यात्रियों को लेकर चंडीगढ़ जा रही थी। सोमवार सुबह बस खुटार पहुंची तो हाईवे पर तिकुनिया तिराहे के पास सड़क किनारे खड़ी ईंटों से भरी ट्रैक्टर ट्रॉली में बस टकरा गई। बताया जा रहा चालक खोखे पर गुटखा की पुड़िया लेने चला गया था। कोहरा अधिक होने की वजह से बस पीछे से टकरा गई।

शिंदे को उड़ा दूंगा, महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम को धमकी देने वाले पर एफआईआर दर्ज

ठाणे। महाराष्ट्र के उपमुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे को धमकी देने के आरोप में ठाणे के एक शख्स पर एफआईआर दर्ज की गई है। ठाणे पुलिस ने कहा कि उसे 26 वर्षीय इस आरोपी के खिलाफ कुछ सबूत मिले हैं, जिसके बाद प्राथमिकी दर्ज की गई। वरिष्ठ इंस्पेक्टर गुलजारीलाल फड़तारे ने बताया कि ठाणे शहर के वरली पाड़ा निवासी हितेश धेंदे नामक आरोपी की तलाश जारी है। पुलिस ने विस्तृत जानकारी दिए बिना बताया कि आरोपी ने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट में उपमुख्यमंत्री के खिलाफ अपमानजनक शब्दों का इस्तेमाल किया और उन्हें जान से मारने की धमकी दी। सोशल मीडिया पर गलत पोस्ट करने पर ये केस हुआ। अधिकारी ने बताया कि शिंदे के नेतृत्व वाली शिवसेना के एक कार्यकर्ता की शिकायत के आधार पर पुलिस ने भारतीय न्याय संहिता की धारा 133 (गंभीर उकसावे के अलावा किसी अन्य कारण से किसी व्यक्ति का अपमान करने के इरादे से हमला या आपराधिक बल का प्रयोग), 352 (शांति भंग करने के इरादे से जानबूझकर अपमान करना), 351 (1) (आपराधिक धमकी) और 356 (2) (मानहानि) के तहत व्यक्ति के खिलाफ मामला दर्ज किया। मामले की जांच की जा रही है।

नकली नोट भी छापता था हत्या का आरोपी

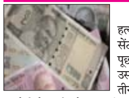

रायपुर। रायपुर-धमतरी के तीन लोगों की हत्या करने वाले दुर्ग स्थित धनोरा के कंप्यूटर सेंटर संचालक सुखवंत साहू उर्फ सुखू से पूछताछ में चौंकाने वाले खुलासे हुए हैं। उसने दुर्ग के पाटन, अम्लेश्वर और नागपुर में तीन लोगों की हत्या की बात कबूल की है। आरोपी ने सभी को धनवर्षा का झांसा दिया था। उनसे दो-दो लाख रुपए लिए थे। उनके घर पर तंत्र पूजा किया, लेकिन धनवर्षा नहीं हुई। इसलिए तीनों उससे अपना पैसा मांग रहे थे। आरोपी ने सभी को जहर देकर मारने की जानकारी दी है। पुलिस की टीम तीनों जगह जांच के लिए पहुंची। वहां के थाने में तीनों की हत्या या गुम इंसान की कोई शिकायत नहीं है। पुलिस अब भी तीनों मामलों की जांच कर रही है। आरोपी के घर से प्रिंटिंग मशीन मिली है। मोबाइल पर नकली नोट छापने का वीडियो भी मिला। आरोपी ने कबूल किया है कि वह प्रिंट का भी काम करता था। पुलिस को शक है कि आरोपी धनवर्षा का झांसा देकर लोगों को नकली नोट थमा देता था। इसलिए लोग उस पर भरोसा करने लगे थे। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि अभनपुर खोरपा निवासी नरेंद्र साहू की हत्या मामले में आरोपी सुखवंत को गिरफ्तार किया जाएगा।

एंबुलेंस ने पैदल मंदिर जा रहे श्रद्धालुओं को टक्कर मारी, दो महिलाओं की मौत

तिरुपति। तिरुपति जिले में सोमवार को एक 108 एंबुलेंस ने श्रद्धालुओं के समूह को टक्कर मार दी। इस हादसे में दो श्रद्धालुओं की मौत हो गई और तीन अन्य घायल हो गए। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, एंबुलेंस ने पैदल तिरुमाला मंदिर जा रहे श्रद्धालुओं के एक समूह को टक्कर मार दी। यह दुर्घटना चंद्रगिरी मंडल के नरसिंहपुरम के पास हुई। हादसे में दो महिलाओं की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि तीन अन्य श्रद्धालु घायल हो गए। मृतक महिलाओं की पहचान अन्नामय्या जिले के रामसमुद्रम मंडल के चंपलपल्ली निवासी पेड्डा रेड्डम्मा (40) और लक्ष्मम्मा (45) के रूप में हुई है। वहीं, घायलों को तिरुपति के रुइया अस्पताल में भर्ती कराया गया है। श्रद्धालु पुंगनूर से तिरुमाला स्थित श्री वेंकटेश्वर मंदिर जा रहे थे, जबकि एंबुलेंस मदनपल्ली से एक मरीज को लेकर तिरुपति जा रही थी। दुर्घटना का सटीक कारण अभी पता नहीं चल पाया है। पुलिस को संदेह है कि इलाके में घना कोहरा होने के कारण यह दुर्घटना हुई।

स्किन केयर व कास्मेटोलाजी क्लिनिक
चर्म , गुप्त, कुष्ठ रोग विशेषज्ञ एवं सैक्स सलाहकार
डॉ.आर.के.अग्रवाल M.B.B.S.D.V.D.FDS (Lond.)F.i.a.m.s.(Ind.)
-: परामर्श का समय :- सुबह 10.30 से 1.30 (शाम को बंद)
डॉ.शशि अग्रवाल M.B.B.S.D.V.D.(U.K) Mob.9826389894
सुविधायें:- गंजापन, मस्से हटाना, दाद खाज खुजली, एक्जीमा, एलर्जी, सड़े नाखून, कुष्ठ रोग, काले दाग, मुंहासे, बाल झड़ना, सेक्स की कमी, शीघ्र पतन, धात, मानसिक रोगों का मशीनों व अत्याधुनिक दवाओं द्वारा शीघ्र ईलाज, फोटोथेरेपी, इलेक्ट्रीशिकेशन, क्रायोसर्जरी, सायकोथेरेपी का ईलाज।
मो. 9203907928,9826389894 (क्लीनिक)
विशेष : बुधवार को 20 मरीजों का फीस माफ...
पता : एचआईजी -4 नेहरू नगर , रिकाण्डो रोड घोड़ा चौक , बुधवारी बाजार के पास, कोरबा

काली मंदिर में चोरी, पुलिस ने एक आरोपी को गिरफ्तार कर सामान बरामद किया

कोरबा। बालको नगर क्षेत्र अंतर्गत स्थित काली मंदिर का ताला तोड़कर सोने चांदी के आभूषण की चोरी करने के मामले में संजीत गुप्ता को गिरफ्तार कर लिया गया है । इस मामले में आरोपी के कब्जे से चोरी का सभी सामान बरामद किया गया है। आरोपी से विस्तृत पूछताछ की जा रही है ।

चोरी की इस घटना को लेकर मनीष विश्वास थाना उपस्थित आकर एक लिखित रिपोर्ट दर्ज कराया था। वह बालको प्लांट में सुरक्षा विभाग में लीड एडमिन के पद पर पदस्थ हैं। दिनांक 04.01.2025 को रात्रि में बालको क्षेत्र में पेट्रोलिंग ड्यूटी लगी थी। अस्सिटेंट मैनेजर बालको आवेश बुन्देला सर, पेट्रोलिंग सुपरवाईजर ओमप्रकाश केवर्त, सुरक्षाकर्मी सुनील सिंह भी थे। सभी दिनांक 04-05 जनवरी 2025 के दरम्यानी रात पेट्रोलिंग पर जी. एम. बंगला तरफ करीबन 02ः20 बजे के आसपास पहुंचे थे तो उसी समय हमें एक मोटर सायकल में एक व्यक्ति घूमते दिखा। जिसके मोटर सायकल टंकी में एक सफेद प्लास्टिक बोरी में कुछ सामान रखा हुआ दिखा तथा पिट्ठू बैग में लादे हुए दिखा। जिसे रोक कर पूछताछ करने पर वह हड़बड़ा गया और बोरी का सामान दिखाने के लिए बोले जाने पर आना कानी करने लगा फिर बाद में उसने पूछताछ करने पर बताया कि वह काली मंदिर बालको में 05.01.2025 के रात्रि लगभग 01ः30 बजे काली मंदिर का ताला तोडकर मंदिर के दान पेटी का रकम नोट एवं सिक्का को एवं काली माता की मूर्ति को पहनाये हुए सोने, चांदी के आभूषण को चोरी कर मोटर सायकल से भाग रहा था तब उसे लेकर काली मंदिर बालको में जाकर देखे तो उस व्यक्ति की कहीं हुई बाते सही निकली। मंदिर के पीछे हिस्से का खिड़की का जाली काटा हुआ व मंदिर एवं दान पेटी का ताला टूटा हुआ मिला। दान पेटी में रकम नहीं होना एवं काली माता की मूर्ति के आभूषण नहीं होना दिखा तब हम उक्त व्यक्ति संजीत कुमार गुप्ता पिता किशोरी लाल गुप्ता उम 32 वर्ष, निवासी नेहरूनगर झंडा चौक के पास थाना बालकोनगर एवं उसकी मोटर सायकल आई स्मार्ट क्रमांक सीजी 12 ए. क्यू 9257 तथा उक्त व्यक्ति का पीठू बैग एवं एक सफेद रंग की प्लास्टिक बोरी जिनमें चोरी का सामान रकम, सोने चांदी के आभूषण तथा खिड़की का जाली काटने एवं ताला तोडने का कटर, हथोडी, छेनी सामान होना बताया है। जो आरोपी संजीत कुमार गुप्ता को मय चुराये हुए सामान, मोटर सायकल व चोरी करने में इस्तेमाल किये गये औजार सहित थाना लाकर उचित कार्यवाही हेतु पेश किया। रिपोर्ट पर अपराध सदर कायम कर विवेचना मे लिया गया। विवेचना दौरान आरोपी से पूछताछ कर मेमोरेण्डम कथन लिया गया जिसके द्वारा अपराध सदर घटित करना स्वीकार करते हुए चोरी किये रकम जिसमें नोट एवं सिक्के, सोने, चांदी के आभूषण थे तथा घटना में प्रयुक्त कटर, छेनी, हथौडी एवं मोटर सायकलल आई स्मार्ट क्र. छ्त्त 12 9257 को पेश किया जिसे नगदी रकम को जप्त कर कब्जा पुलिस लिया गया है। आरोपी के विरूद्ध अपराध सदर सबूत पाये जाने से विधिवत गिरफ्तार कर निक अभिरक्षा में भेजा गया।

धार्मिक कार्यक्रम की आड़ में आभूषण पार करने वाली महिला गिरफ्तार

कोरबा। कुसमुंडा स्थित गायत्री मंदिर में आयोजित 108 कुंडीय महायज्ञ के दौरान एक महिला के गले से मंगलसुत्र की चोरी करते महिला चोर रंगे हाथ पकड़े गई है। आयोजन के शुरुआत के साथ ही कई महिलाओं के गले से मंगलसुत्र की चोरी हो गई। आयोजन के अंतिम दिन भंडारे के दौरान फिर से चोरी करने का प्रयास किया गया,लेकिन इस बार महिला सफल नहीं हो सकी। महिला को पकड़कर उसे पुलिस के हवाले कर दिया गया है।

भीड़ का फायदा उठाकर महिलाओं के गले से मंगलसुत्र की चोरी करने वाली एक महिला को पकड़कर पुलिस के हवाले कर दिया गया है। इससे पहले महिलाओं ने उसकी जमकर पिटाई की,फिर पुलिस के सुपूर्द कर दिया गया। मामला कुसमुंडा थाना क्षेत्र का है जहां के गायत्री मंदिर में 108 कुंडीय महायज्ञ के अंतिम दिन भंडारा का आयोजन हो रहा था। इसी दौरान महिला चोर एक महिला के गले से मंगलसुत्र की चोरी कर रही थी। भनक लगने पर महिला ने चोर को पकड़ लिया,फिर क्या था मौके पर मौजूद महिलाओं ने उसकी जमकर धुनाई की फिर पुलिस के हवाले कर दिया।चोरी के मामले में पकड़ी गई महिला दादर की निवासी है,जिसका पूरा गिरोह महायज्ञ में सक्रीय था। आयोजन के शुरुआत से ही कई महिलाओं के गले से मंगलसुत्र की चोरी हो चुकी है। अब जब चोर पकड़ में आ चुकी है,तो पुलिस उसके साथियों का पता लगा रही है,ताकी चोरी का पूरा माल बरामद हो सके।

राष्ट्रीय अधिवेशन में भाग लेने अशोक दिल्ली रवाना

कोरबा। अखिल भारतीय अग्रवाल संगठन का राष्ट्रीय अधिवेशन एवं अग्र अलंकरण समारोह नई दिल्ली में आयोजित है। जिसमें भाग लेने के लिए अखिल भारतीय अग्रवाल संगठन के कार्यकारिणी सदस्य एवं छत्तीसगढ़ प्रांतीय अग्रवाल संगठन के चेयरमैन अशोक मोदी रवाना हो गए हैं।

सीबीआई पिंजरे का तोता है, यह धारणा हर दौर में सही नहीं

बहुचर्चित चारा घोटाले का खुलासा करने वाले अधिकारी उपेंद्रनाथ का दावा

कोरबा। देश के बिहार राज्य में बहुचर्चित चारा घोटाला की चर्चा पिछले कुछ दशक से होती रही है। इस मामले में बिहार के तत्कालीन मुख्यमंत्री लालू प्रसाद यादव को कोर्ट ने सजा दी और जुर्माना भी लगाया। इस बहुचर्चित मामले का खुलासा करने वाले सीबीआई के पूर्व जॉइंट डायरेक्टर उपेंद्रनाथ विश्वास ने कोरबा में मीडिया से बातचीत की। उन्होंने इस मामले की जांच के दौरान के अनुभव को साझा किया और यह भी बताया कि पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी के लिए भ्रष्टाचार कोई बड़ा विषय नहीं है।

कोरबा प्रवास पर पहुंचे सेंट्रल ब्यूरो ऑफ इन्वेस्टिगेशन के पूर्व जॉइंट डायरेक्टर उपेंद्रनाथ विश्वास को सरकारी नौकरी के दौरान विभिन्न दायित्व निभाने का अवसर मिला। उसे दौरान उन्होंने कई अनुभवों को लेकर बातचीत की। बिहार के बहुचर्चित 1000 करोड़ से भी ज्यादा के चारा घोटाले के बारे में चर्चा करते हुए उपेंद्रनाथ ने बताया कि इस मामले को लेकर कुछ लोगों ने सुप्रीम कोर्ट में जनहित याचिका लगाई थी जो स्वीकार की गई। इस मामले की जांच के लिए सीबीआई को आदेश दिया गया। टीम का नेतृत्व उपेंद्र नाथ ने खुद किया।

क्या सीबीआई वास्तव में सरकार के पिंजरे के तोते के समान है इस सवाल के जवाब में उपेंद्रनाथ ने बताया कि रंजीत सिंह के मामले को छोड़ दिया जाए तो उन्होंने खुद ऐसा कभी महसूस नहीं किया।

सीबीआई की सेवा से रिटायर होने के बाद उपेंद्रनाथ ने पश्चिम बंगाल में राजनीति भी की। 10 वर्ष तक उन्होंने अनुसूचित जाति जनजाति मंत्रालय और निगम का कामकाज संभाला। एक सवाल के जवाब में उन्होंने बताया कि ममता बनर्जी के शासनकाल में गजब का भ्रष्टाचार फलता फूलता रहा। उन्होंने महसूस किया कि सरकारी योजनाओं के अलावा 10000 करोड रुपए को यहां से वहां करने का मामला बहुत आसान तरीके से हो गया। ममता बनर्जी के लिए भ्रष्टाचार कोई बड़ा मुद्दा नहीं है।

उपेंद्रनाथ विश्वास ने बातचीत के दौरान राजनीति के काले अध्यायों को लेकर भी बहुत कुछ खुलासे किया। उन्हें संतोष इस बात का है कि सीबीआई से रिटायर होने के बाद भी सुप्रीम कोर्ट ने कुछ मामलों के निपटारे के लिए उन्हें 1 साल की सेवा वृद्धि दी। उनकी इच्छा इस प्रस्ताव को स्वीकार करने की नहीं थी लेकिन धर्मपत्नी के द्वारा सही तरीके से मार्गदर्शन करने पर उन्होंने फिर से नौकरी ज्वाइन की और मामलों का निराकरण किया।

दृष्टिबाधित विद्यालय के छात्रों ने ब्रेललुई को याद किया

कोरबा। सक्ती जिले में ब्रेल लुई दिवस पर स्थानीय दृष्टि बाधित विशेष विद्यालय द्वारा क्षेत्र में जन जागरुकता रेली निकाली गई। रैली में यातायात थाना प्रभारी कमलकिशोर महतो एवं दृष्टि बाधित विशेष विद्यालय के जनभागीदारी समिति के अध्यक्ष एवं उच्च न्यायालय अधिवक्ता चितरंजय पटेल शामिल हुए। थाना परिसर में थाना प्रभारी ब्रजेश तिवारी ने सभी दिव्यांग बच्चों एवं लोगों को स्वल्पाहार करने के साथ सबके उज्जवल भविष्य की कामनाएं की।

पत्रकार मुकेश को कोरबा प्रेस क्लब ने दी श्रद्धांजलि, आक्रोश प्रकट कर निकाला कैंडल मार्च

कोरबा। बस्तर संभाग के बीजापुर जिले के जुझारू पत्रकार मुकेश चंद्राकर की निर्मम हत्या पर कोरबा प्रेस क्लब। इन घटना की निंदा करते हुए शनिवार के शाम को श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया। इस दौरान कोरबा जिले के पत्रकारों ने पत्रकार हितों से जुड़े मुद्दों को उठाया। यह भी कहा कि वर्तमान दौर पत्रकारिता के लिए चिंतनीय है। ऐसे समय में पत्रकारों को एकजुट रहकर संघर्ष करने की जरूरत है। आपसी मतभेदों को जोड़कर भूल कर पत्रकारों को एक मंच पर आना चाहिए। पत्रकार मुकेश चंद्राकर की हत्या के बाद पत्रकार जगत में रोष व्याप्त है। सभी इस मुद्दे को लेकर उद्वेलित हैं।

जिसे लेकर कोरबा प्रेस क्लब के सदस्यों ने तिलक भवन से कैंडल मार्च निकाला और श्रद्धांजलि सभा को टीपी नगर चौक में समाप्त किया।

प्रेस क्लब तिलक भवन में कोरबा जिले के सभी पत्रकारों ने मुकेश चंद्राकर की निर्मम हत्या पर आक्रोश व्यक्त किया। घटना की कड़े शब्दो में निंदा की। इसे भ्रष्टाचार में लिप्त ठेकेदार, अधिकारी और शासन के गठजोड़ का परिणाम बताया। यह भी कहा कि किसी पत्रकार को सिर्फ इसलिए मौत के घाट उतार दिया गया, क्योंकि उसने जनता की आवाज उठाई। व्यवस्था को आईना दिखाने का काम किया। यह सिर्फ मुकेश चंद्राकर की मौत नहीं है। यह पत्रकारिता की मौत होने जैसा है.वरिष्ठ पत्रकार कमलेश यादव ने कहा कि सिर्फ श्रद्धांजलि देने भर से हम अपनी जिम्मेदारी पूरी नहीं कर सकते। हमें ठोस पहल करनी होगी। हममें से कई लोग विपरीत परिस्थितियों में काम करते हैं। हमारा काम दो धारी तलवार पर चलने जैसा होता है। आज अगर मुकेश की बारी है, तो कल हममें से किसी एक को भी ऐसी परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है.वरिष्ठ पत्रकार मनोज शर्मा ने कहा कि क्षोभ और आक्रोश दोनों ही अपने चरम पर है। ऐसी घटनाओं से मन विचलित होता है। किसी भी स्तर पर यह घटना स्वीकार्य नहीं है। चंद्राकर एक बेहद जुझारू और जांबाज पत्रकार थे। जिन्होंने सड़क निर्माण से जुड़े मुद्दे को उठाया। भ्रष्टाचार को उजागर किया, अब कई तथ्य सामने आ रहे हैं। बस्तर के आईजी ने आरोपियों को गिरफ्तार कर लिए जाने की बात कही है। इस मामले में हम ठोस कार्रवाई की मांग भी करते हैं और भविष्य में ऐसा ना हो इसके लिए एक कड़ा उदाहरण पेश किया जाना चाहिए.

वरिष्ठ पत्रकार गेंदालाल शुक्ला ने कहा कि जब भी ऐसा कोई मामला संज्ञान में आता है। तब मन बड़ा विचलित होता है। लेकिन कोरबा प्रेस क्लब की प्रशंसा की जानी चाहिए कि इस तरह के घटना के बाद एक स्टैंड लिया और आयोजन किया। कोरबा प्रेस क्लब प्रदेश का सबसे जुझारू प्रेस क्लब रहा है। लेकिन श्रद्धांजलि से आगे बढ़कर हमें कुछ ठोस करने की जरूरत है। हमें मुकेश चंद्राकर की मौत का दुख है। गहरी श्रद्धांजलि प्रकट करते हैं, लेकिन इस मामले को आगे तक लेकर जाना चाहिए। पत्रकार सुरक्षा कानून की बात अक्सर होती है। विधानसभा में से पारित भी किया गया। लेकिन अब तक इसे लागू नहीं किया गया है। इसे तत्काल लागू किया जाना चाहिए। तभी यह मुकेश चंद्राकर को एक सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

इस दौरान तिलक भवन में मौजूद सभी पत्रकारों ने मुकेश चंद्राकर को श्रद्धांजलि अर्पित की और उनकी दिवंगत आत्मा की शांति की प्रार्थना की। आयोजन में प्रेस क्लब संरक्षक मनोज शर्मा, कमलेश यादव, गेंदलाल शुक्ला, तपन चक्रवर्ती, सुरेश रोहरा, सनद दीवान, वरिष्ठ पत्रकार देवेन्द्र गुप्ता, मनोज ठाकुर, रफीक मेमन, नागेंद्र श्रीवास, दिनेश राज, राजकुमार शाह, रमेश राठौर, नीलम पड़वार, कृष्णा राठौर, राजेश मिश्रा, प्रकाश साहू, भुनेश्वर महतो, युधिष्ठिर राजवाड़े, संदीप केशरवानी, उमेश मकवाना, योगेंद्र लहरें, संतोष दीवान, रघुनंदन सोनी, दुर्गेश श्रीवास्तव, राजा मुखर्जी, प्रीतम जायसवाल, विजय सिंह, ईश्वर चंद्रा, विक्की निर्मलकर, रण विजय सिंह, दीपक गुप्ता, दीपक साहू, मनोज पाहुजा, देवेंद्र गुप्ता, बीता चक्रवर्ती, रेणु जायसवाल, मनीष जायसवाल, अनीश सिंह, शैलेश अग्रवाल, इरफान, गुनेश्वर प्रसाद,राजेश साहू, मुरीत राम, हीरा राठौर, मिथिलेश कुमार, संदीप शर्मा, गयानाथ मौर्य व अन्य मौजूद रहे।

जीवन को संवारने सत्संग जरूरी : द्विवेदी

कोरबा। मुड़ापार में शिव महापुराण कथा का सात दिवसीय आयोजन महिला समिति के द्वारा किया जा रहा है। जिसका शुभारंभ रविवार को कथा स्थल से एसईसीएल कॉलोनी शिव मंदिर तक कलश यात्रा निकालकर की गई। जिसमें कथावाचक सहित बड़ी संख्या में महिलाएं शामिल हुईं। आयोजन स्थल पर यात्रा की वापसी हुई और वरुण पूजन की परंपरा पूरी की गई।

शिव महापुराण कथा के प्रथम दिवस पंडित दशरथ नंदन द्विवेदी ने कहा कि ओम नमः शिवाय अत्यंत शक्तिशाली मंत्र है। जिसमें मानव मात्र के कल्याण की सात्विक और सकारात्मक ऊर्जा शामिल है। भगवान शिव वैसे भी अपने भक्तों पर पूरी उदारता से कृपा करते हैं। इसलिए उनका मंत्र उनके जीवन को और भी बेहतर करता है। वैदिक मन्त्रों की शक्तियों के बारे में भी उन्होंने विस्तार से बताया। शिव महापुराण के पहले अध्याय के अंतर्गत कथावाचक पंडित द्विवेदी ने बताया कि शिवजी ने पार्वती जी का मार्गदर्शन किया कि उन्होंने मन को एकाग्र करके दिव्य सहस्त्रों वर्षों तक तपस्या की। तपस्या के बाद उन्होंने नेत्रों को खोला, जिससे आंसू निकले। इन आंसुओं की बूंदों से गौड़ प्रदेश से लेकर मथुरा, काशी, अयोध्या, मलयाचल और सशस्त्र पर्वत जैसे प्रदेशों में रुद्राक्ष के पेड़ पैदा हो गए। इससे रुद्राक्ष की महिमा और बढ़ गई। शिवजी और पार्वती ने भी इसकी महिमा का वर्णन किया। आगे कहा कि शिव महापुराण कथा अपने आप में चमत्कारिक है। इसीलिए वैश्विक स्तर पर इससे जुड़े हुए आयोजन की निरंतर श्रृंखला चल रही है।

घेराबंदी कर दबोचे गए दो तस्कर

कोरबा। छुरी में शराब खपाने बाइक में जा रहे दो लोगों को पुलिस ने पकड़ा। उनके पास से 30 लीटर शराब जब्त होने पर उन्हें जेल भेजा गया। कटघोरा थाना प्रभारी निरीक्षक धर्मनारायण तिवारी ने बताया कि छुरी के रावणभाटा मैदान के पास दो लोग महुआ शराब लेकर जा रहे थे। मुखबिर से सूचना मिलने पर गश्त कर रहे आरक्षक रमेश कश्यप व उनकी टीम को मौके पर भेजा गया। जहां टीम ने घेराबंदी करके बताए गए हुलिए के आधार पर बाइक सवार दो लोगों को पकड़ा। उनके पास से दो गैलन में 30 लीटर महुआ शराब मिला। पूछताछ करने पर दोनों लोगों ने अपना नाम रावणभाटा निवासी रवि सारथी व मुशीर खान बताया। वहीं शराब को खपाने के लिए लेकर जाना बताया।

हड्डियों से संबंधित मामलों के समाधान के लिए शुरू होंगे आर्थो हब

कोरबा। मेडिकल कॉलेज अस्पताल में आर्थोपेडिक डिपार्टमेंट अब जल्द ही आर्थो हब में बदलने जा रहा है। जहां अलग से ओटी व वार्ड होने के बाद हड्डी रोग संबंधित बीमारी का त्वरित इलाज व जटिल ऑपरेशन भी हो सकेंगे।

स्व. बिसाहू दास महंत स्मृति मेडिकल कॉलेज से संबद्ध जिला अस्पताल में लगातार चिकित्सा सुविधाएं बढ़ रही हैं। वहीं अब आर्थो (हड्डी) से संबंधित बीमारी के मरीजों के लिए आर्थोपेडिक डिपार्टमेंट जल्द ही आर्थो हब में बदलने जा रहा है। जिसके लिए शनिवार को मेडिकल कॉलेज डीन डॉ. केके सहारे ने संयुक्त संचालक डॉ. गोपाल कंवर, सहायक अस्पताल अधीक्षक डॉ. रविकांत जाटवर समेत अन्य अधिकारियों के साथ ट्रामा सेंटर का निरीक्षण करते हुए चिकित्सा कक्ष, वार्ड व ओटी के लिए अस्पताल परिसर के ट्रामा सेंटर बिल्डिंग के दूसरे तल के कमरों को चुना। जहां सुसज्जित 2 ओटी रूम पहले से तैयार है। जरूरी उपकरणों के इंस्टॉलेशन के साथ ही दोनों ओटी में ऑपरेशन शुरू हो जाएगा। आर्थो हब में अस्थि रोग विशेषज्ञों की संख्या बढ़ जाएगी, साथ ही संसाधन भी बढ़ेंगे। आर्थो हब में मात्र हड्डी संबंधी मरीजों की जांच, इलाज व ऑपरेशन की सुविधा होने से ऐसे बीमारी के मरीजों को भटकना नहीं पड़ेगा। आर्थो हब में 50 मरीजों का वार्ड होगा।

आर्थो हब के लिए तैयारी पूरी जल्द ही सुविधा की जाएगी शुरू ट्रस्व. बिसाहू दास महंत स्मृति मेडिकल कॉलेज के डीन डॉ. केके सहारे के मुताबिक अस्पताल के आर्थोपेडिक डिपार्टमेंट की जगह आर्थो हब बनाया जा रहा है। जिसके लिए ट्रामा सेंटर बिल्डिंग में तैयारी पूरी कर ली गई है। जल्द ही सुविधा शुरू हो जाएगी।मुफ्त होंगी डेढ़ लाख के खर्चे पर होने वाली सर्जरी मेडिकल कॉलेज अस्पताल के सह अस्पताल अधीक्षक डॉ. रविकांत जाटवर के मुताबिक अस्पताल में वर्तमान में डॉ. घनश्याम दिवान के साथ विशेषज्ञ द्वय डॉ.श्रीकांत जांगड़े व डॉ. दीपक घृतलहरे ही आर्थोपेडिक डिपार्टमेंट संभाल रहे हैं। उनके द्वारा चिकित्सा कर्मियों के साथ टीम वर्क से एक साल के दौरान टीम ने 12 हिप रिप्लेसमेंट व 4 नी रिप्लेसमेंट किया गया। जिसके लिए निजी अस्पतालों में डेढ़ लाख रुपए तक के खर्चे चुकाने पड़ते है।

नोडल अधिकारी व शाखा प्रबंधक का किया सम्मान

कोरबा। जिला सहकारी केंद्रीय बैंक कर्मचारी संघ का नववर्ष सम्मेलन समारोह बिलासपुर में हुआ। जिसमें अधिकारी कर्मचारियों के साथ भी प्रतिभावान बच्चों का सम्मान किया गया।

जिला सहकारी बैंक कोरबा के नोडल अधिकारी सुशील जोशी और शाखा प्रबंधक जमनीपाली नेहा पांडे को बैंक के मुख्य कार्यपालन अधिकारी सुनील सोढ़ी, कर्मचारी संघ के अध्यक्ष भागवत यादव, पूर्व अध्यक्ष शशांक शेखर दुबे ने सम्मानित किया। उसके साथ ही जोशी के पुत्र संस्कार जोशी भी सम्मानित हुए। बैंक के सीईओ सोनी ने सम्मान समारोह में प्रतिभावान छात्राओं को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित किया। कर्मचारी संघ की ओर से यह सम्मान उत्कृष्ट कार्य करने के लिए दिया गया है। इसके अलावा अधिकारी कर्मचारियों के प्रतिभावान बच्चों को भी सम्मानित किया गया।

न्यू एरा प्रोग्रेसिव स्कूल में वार्षिकोत्सव मनाया गया

कोरबा। न्यू एरा प्रोग्रेसिव स्कूल का वार्षिकोत्सव शनिवार को हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कक्षा नर्सरी से 5वीं तक की छात्र-छात्राओं के लिए आयोजित इस उत्सव का शुभारंभ जिला शिक्षा अधिकारी टीपी उपाध्याय, स्कूल के संरक्षक बीएल साहू, चेयरमैन किशोर कुमार साहू, डायरेक्टर दिलीप कुमार साहू, प्राचार्य डीएस राव, प्रधान पाठक जगजीत सिंह ने मां सरस्वती की पूजा अर्चना व दीप प्रज्ज्वलित कर किया। नन्हें बच्चों ने वार्षिकोत्सव में विभिन्न राज्यों के लोकनृत्य की मनमोहक प्रस्तुति दी। जिसे उपस्थित पालक, छात्र-छात्राएं व अतिथियों व स्टाफ ने सराहा।

छात्रों द्वारा केरल, पश्चिम बंगाल, मराठी, असम आदि राज्यों की संस्कृति की झलक अपनी प्रस्तुति व वेशभूषा में बताए। कार्यक्रम के दौरान सत्र 2023-24 में बोर्ड परीक्षा में उत्कृष्ट प्रदर्शन करने वाले छात्रों को सम्मानित किया गया। आयोजन में चेयरमैन किशोर कुमार साहू ने कहा कि स्कूल में इस तरह के आयोजन से छात्रों का सर्वांगीण विकास होता है। सभी छात्रों को आने वाले वर्षों के कार्यक्रमों में भाग लेने के लिए प्रेरित किया।

सप्तदेव मंदिर न्यास ने ठंड से बचाने लोगों को कंबल बांटे

कोरबा। श्री सप्तदेव मंदिर ट्रस्ट की ओर से ठंड से बचाने के लिए नगर पंचायत छुरी के जरूरतमंद लोगों को कंबल वितरित किया गया। कंबल वितरण श्री सप्तदेव मंदिर के ट्रस्टी अशोक मोदी व चैतन्य मोदी द्वारा किया गया। क्षेत्र में 100 लोगों को कंबल दिया गया। इस मौके पर छुरी नगर पंचायत के पूर्व अध्यक्ष के पुत्र पीयूष पंजवानी ने कंबल वितरण में सहयोग किया।

नवागढ़ पुलिस ने धोखाधड़ी के मामले में आरोपी को गिरफ्तार किया

चांपा। प्रार्थी कमलेश देवांगन निवासी अमोदा थाना नवागढ़ के द्वारा के द्वारा रिपोर्ट दर्ज कराया कि मुख्तार अली व उसका पुत्र गांव में किराना दुकान व ऑनलाइन लेन-देन का काम करवाते थे कुछ दिनों के बाद मुख्तार अली व उसका पुत्र ने खुद का बैंक होना बताया कि उनके बैंक में पैसा जमा करने पर हर माह एक से दो प्रतिशत ब्याज दिया जाएगा इनकी बात पर ग्रामीणों ने विश्वास करके उनके पास पैसा जमा करने लगे पीड़ितों के द्वारा किश्त किश्त के रूप में पैसा जमा करते थे , प्रार्थी कमलेश देवांगन के द्वारा भी दिनांक 22/ 6/2017 से 1/6/2020 तक कुल 24 किस्तों में 23 लाख 30000 रुपए जमा किया है इसके अलावा गांव के अन्य 20-25 लोग भी लाखों रुपए पैसा जमा किए हैं पैसा जमा करते समय मुख्तार अली के द्वारा सभी लोगों को एक छोटी-छोटी डायरी को पास बुक जैसा बनकर मुख्तार अली किराना पोस्ट अमोदा चांपा 495668 एवं AEREOLD TECHNOLOGY PRIVATE LIMITED AMODA का सील लगा कर अपना हस्ताक्षर करके पावती देता था , प्रार्थी एवं अन्य लोगों के द्वारा घरेलू काम हेतु पैसा की जरूरत पड़ने पर मुख्तार अली व उसके पुत्र से पैसा मांगने पर आज देंगे कल देंगे कह कर बोलते थे, इस प्रकार सेआरोपियों के द्वारा लगभग 50 से 60 लाख रुपए का ठगी किया गया है 2 से 3 वर्ष पूर्व मुख्तार अली व उसका पुत्र गांव अमोदा छोड़कर परिवार सहित रायपुर चला गया तब प्रार्थी और अन्य ग्रामीणों को शंका हुआ कि मुख्तार अली और उसके पुत्र के द्वारा सभी के साथ पैसा लेकर धोखाधड़ी किया है पैसा लेकर फरार हो गया है पैसा वापस मिलने के इंतजार में पीड़ित रिपोर्ट दर्ज नहीं कर रहे थे परन्तु जब पैसा मिलने की उम्मीद खत्म हो जाने से थाना नवागढ़ में अपराध क्रमांक 03/25 धारा 420,34 ipc कायम कर विवेचना कार्रवाई में लिया गया विवेचना दौरान आरोपी मुख्तार अली निवासी हाल रायपुर को सकुनत से पकड़ा जिसको पूछताछ कर करने पर जुर्म स्वीकार किए जाने से विधिवत गिरफ्तार कर न्यायिक रिमांड पर भेजा गया है।

बाइक से गिरकर ड्राइवर की मौत

रायगढ़। बाइक से घर लौट रहे दो युवक अनियंत्रित होकर खेत में गिर गए। हादसे में दोनों युवक को गंभीर चोट लगी थी। रविवार की सुबह इलाज के दौरान एक की मौत हो गई। दूसरे के हाथ में गंभीर चोट लगी है। उसका इलाज जारी है। जानकारी के अनुसार विजय गोड़(21) सक्ती जिले के ग्राम मसनियां खुर्द के रहने वाला था। वह रायगढ़ में ट्रेलर ड्राइवर था। वहीं, गांव के एक अन्य युवक शिवा गोड़ उसी ट्रेलर का खलासी था। दोनों बाइक से रायगढ़ आते थे। फिर काम कर वापस चले जाते थे। बीते शाम 7 बजे विजय की सोल्ड बाइक से सक्ती अपने घर जा रहे थे। तभी हादसा हो गया।

पुरस्कृत व्यक्ति से सामाजिक अपेक्षाएं बढ़ जाती है :राजेश्री महन्त

अभनपुर। गोयत्री मंदिर में आयोजित सामाजिक समरसता सम्मान समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में महामंडलेश्वर राजेश्री महन्त रामसुन्दर दास जी महाराज उपस्थित हुए। कार्यक्रम की अध्यक्षता उद्यानिकी विश्व विद्यालय के अधिष्ठाता डॉक्टर सियाराम साहू ने की। शुभारंभ माता लक्ष्मी, सरस्वती एवं गणेश जी के तैल चित्र पर दीप प्रज्वलित करके किया गया। इस कार्यक्रम में 43 पीएचडी धारकों को सम्मानित किया गया, वे सभी लोग समाज के अनेक क्षेत्र में सामाजिक समरसता स्थापित करने के लिए कार्यरत हैं। इस अवसर पर लोगों को संबोधित करते हुए मुख्य अभ्यागत राजेश्री महन्त जी महाराज ने कहा कि- जिन व्यक्तियों को पुरस्कृत किया जाता है उनसे सामाजिक अपेक्षाएं बढ़ जाती है लोग उनके कार्यों से प्रेरणा लेकर आगे बढ़ते हैं। यह संस्था सामाजिक, साहित्यिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्र में विकास के लिए 1984 से कार्यरत हैं। बधाई के पात्र हैं। कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ साहू ने छत्तीसगढ़ के सांस्कृतिक विरासत को आगे बढ़ाने के संदर्भ में अपना विचार प्रस्तुत किया, उन्होंने छत्तीसगढ़ी गीत भी गाए। कार्यक्रम के आयोजक डॉक्टर सुखदेव साहू थे। इस कार्यक्रम में छत्तीसगढ़ राज्य के अनेक जिले से आए हुए विद्वान बड़ी संख्या में सम्मिलित

दिवंगत पत्रकार मुकेश चंद्रा को श्रद्धांजलि

प्रेस क्लब ने घटना की निन्दा कर आरोपी को फांसी देने की मांग की

जांजगीर-चांपा। जिला प्रेस क्लब द्वारा दिवंगत पत्रकार मुकेश चंद्रा को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। शहीद स्मारक जांजगीर में आयोजित इस कार्यक्रम में पत्रकारों ने कैंडल जलाकर अपनी संवेदनाएं प्रकट कीं और उनके हत्यारे के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की मांग की।

हत्यारे को फांसी और शहीद का दर्जा देने की मांग कार्यक्रम के दौरान जिला प्रेस क्लब ने पत्रकार मुकेश चंद्रा को शहीद का दर्जा देने की मांग की। साथ ही उन्होंने हत्यारे को फांसी की सजा दिलाने की अपील की। क्लब के सदस्यों ने इस घटना पर गहरा आक्रोश व्यक्त किया और इसे प्रेस की स्वतंत्रता पर हमला बताया।परिवार के लिए मुआवजा और सरकारी नौकरी की मांग

प्रेस क्लब ने राज्य सरकार से पत्रकार मुकेश चंद्रा के परिवार को उचित मुआवजा देने और परिवार के एक सदस्य को सरकारी नौकरी प्रदान करने की मांग रखी। उन्होंने कहा कि यह सरकार की जिम्मेदारी है कि वह पत्रकारों की सुरक्षा सुनिश्चित करे और इस तरह की घटनाओं पर कठोर कदम उठाए।

प्रेस की स्वतंत्रता के लिए एकजुटता का संदेश

इस मौके पर क्लब के सदस्यों ने प्रेस की स्वतंत्रता और सुरक्षा के लिए एकजुटता का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि पत्रकारों पर होने वाले हमलों को सहन नहीं किया जाएगा और न्याय की लड़ाई जारी रहेगी।

दिवंगत मुकेश चंद्रा को श्रद्धांजलि देने और उनकी हत्या के खिलाफ उठाई गई आवाज ने एक बार फिर पत्रकारिता की गरिमा और जिम्मेदारी को उजागर किया है।

भैंसदा के उपकेन्द्र में मिली अनियमितता, मांगा जवाब

जांजगीर। जिले धान खरीदी जारी है। 3 जनवरी को उपकेन्द्र भैंसदा में अनियमितता मिली है। प्राधिकृत अधिकारी समर्थ सिंह द्वारा खरीदी केन्द्र का निरीक्षण किया गया। इस दौरान केन्द्र में कई प्रकार की अनियमितता मिली है।

खरीदी केन्द्र प्रभारी की लगातार अनुपस्थिति पाए गए। धान स्टेक मापदण्ड अनुसार नहीं मिला। खरीदी केन्द्र में इलेक्ट्रानिक तराजू का सत्यापन सर्टिफिकेट नहीं था। चुनिन्दा किसानों का धान डायरेक्ट स्टेक में लगाने की प्रमाणित जानकारी मिली। शासकीय मानक से अधिक खरीदी की पूर्ण जानकारी प्राप्त होने से प्राधिकृत अधिकारी ने खरीदी प्रभारी से 3 दिन के भीतर लिखित जवाब स्पष्टीकरण देने पत्र जारी किया है। अनियमितता लिखित जानकारी प्राधिकृत अधिकारी ने जिला उपपंजीयक कार्यालय, जिला सहकारी केन्द्रीय बैंक शाखा प्रबंधक जांजगीर को दी है।

खोखरा खरीदी केन्द्र में भी धान की मिली गड़बड़ी अधिक धान खरीदी की शिकायत मिलने पर पिछले दिनों तहसीलदार,ि जला नोडल अधिकारी की टीम ने छापा मारा तो जांच में 4 किलो तक धान अतिरिक्त मिला। उसे नोटिस जारी कर तीन दिन के भीतर जवाब मांगा गया है। जवाब संतोषजनक नहीं होने पर उसके खिलाफ कार्रवाई की जा सकती है।

घर के पास से बरामद हुआ गुमशुदा युवक का शव

चंडीपारा। रविवार को दोपहर 2.00 बजे ग्राम चंडीपारा में धनबोड़ा तालाब के पास अज्ञात व्यक्ति की लाश मिली। गांव के लोगों ने सूचना पुलिस को दी। पुलिस मौके पर पहुंची और शव को तालाब से बाहर निकाला। शव को देखकर गांग के लोगों ने करण दिनकर के रूप में शिनाख्त किया। करण 15 दिसंबर को घर से कहीं बाहर चला गया था। परिजनों के खोजबीन के बाद भी उसका कहीं अता-पता नहीं चला।

30 साल बाद नगर पालिका की कमान संभालेंगे प्रशासक

जांजगीर। 30 साल के बाद एक बार फिर नगर पालिका जांजगीर-नैला की कमान प्रशासक के हाथों में होगी। 5 जनवरी यानि रविवार को नगर पालिका जांजगीर-नैला का पांच सालों का कार्यकाल पूरा हो गया।

वर्ष 2019 में नगरीय निकाय चुनाव को लेकर नवंबर में आचार संहिता लगी थी। 30 नवंबर से नामांकन प्रक्रिया की शुरुआत हुई थी। इसके बाद 21 दिसंबर को मतदान व 24 दिसंबर को मतगणना हुई थी। जिले के 3 नगर पालिका और 9 नगर पंचायत में वर्ष 2020 में 6 जनवरी तक अध्यक्ष तय हो चुके थे। 6 जनवरी को अध्यक्ष पद के लिए चुनाव हुआ था। तब पार्षदों की वोटिंग से नगर पालिका जांजीगर नैला में भगवान दास गढ़ेवाल और चांपा में जय थवाईत अध्यक्ष बने। दोनों नगर पालिका में अध्यक्ष की कुर्सी पर कांग्रेस समर्थित अध्यक्ष काबिज हुए थे। हालांकि राज्य निर्वाचन आयोग द्वारा अब तक चुनाव तिथि की की घोषणा नहीं की है। यही वजह है कि नगर पालिका की कमान प्रशासक के हाथों में सौंपी जा रही है। हालांकि निर्वाचन आयोग की घोषणा के बाद चुनावी प्रक्रिया शुरू कर दी है लेकिन चुनावी प्रक्रिया के लिए

अभी समय लगेगा। तब तक प्रशासक ही नगर पालिका जांजगीर-नैला के अलावा सभी नगरीय ि़निकायों की कमान संभालेगा। वर्ष 1995 तक नगर पालिका जांजगीर-नैला में प्रशासक नियुक्त किया जाता था। हालांकि इस बार 10 जनवरी या इसके बाद मालूम होगा कि आचार संहिता कब से लगेगी।

ऐसे बदलेगी कार्यप्रणाली चरित्र प्रमाण पत्र, बीपीएल सर्टिफिकेट के लिए सर्टिफिकेट आदि के प्रमाण पत्र जो पार्षदों की ओर से जारी किए जाते थे अब वह नगर पालिका कार्यालय से ही मिलेंगे। इनके प्रशासक बनने की संभावना नगरीय निकाय प्रशासक अधिकारी जांजगीर नैला दुर्गा प्रसाद अधिकारी चांपा नीरनिधि नंदेहा अकलतरा विक्रांत अंचल खरौद महेंद्र लहरे शिवरीनारायण अविनाश चौहान नवागढ़ आराधना प्रधान बलौदा अरुणा आहेर सारागांव अमरनाथ

बोलेरो ने मारी टक्कर, बाइक सवार दो युवकों की गई जान

जांजगीर। घर वापस लौटते समय पुछेली के पास बाइक सवार दो युवकों को सामने से आ रही बोलेरो ने टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जबरदस्त थीि क बाइक सवार दोनों युवक उछलकर दूर जा गिरे। इस दुर्घटना से एक युवक की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि दूसरा युवक अस्पताल पहुंचने से पहले ही दम तोड़ दिया। मामला

बम्हनीडीह थाना क्षेत्र का है। जानकारी के अनुसार शनिवार की देर शाम पिपरदा निवासी बसंत पटेल (18 साल) और राजेश पटेल (19 साल) घूमने के लिए बाइक से बम्हनीडीह आए हुए थे। कुछ घंटों तक घूमने के बाद अपने घर वापस जा रहे थे। इस बीच पुछेली गांव के मुख्य मार्ग पर चाम्पा की ओर से आ रही तेज रफ्तार बोलेरो वाहन ने विपरीत दिशा से आते हुए सामने से जोरदार टक्कर मारी दी, हादसे में दोनों बाइक से उछल कर एक दूसरे से दूर सड़क में जा गिरे। वही मौका देख चालक गाड़ी लेकर मौके से फरार हो गया। जिससे दोनों युवकों के सिर पर गंभीर चोट राजेश पटेल के सिर से अधिक खून बहने से मौके पर ही मौत हो गई। वही बसंत पटेल को जिला अस्पताल लाया गया, मगर हालत गंभीर होने पर बिलासपुर रेफर किया गया था। अस्पताल पहुंचने से पहले ही बसंत ने रास्ते में ही दम तोड़ दिया। बहरहाल दुर्घटना के बाद पुलिस मामले की जांच की जुटी है।

चेयरपर्सन लीनेस विनिता जायसवाल ने बांटे कंबल

सक्ती। आल इंडिया लीनेस क्लब्स डिस्ट्रिक्ट सी एम -1 संपदा की लीनेस क्लब सक्ती की डिस्ट्रिक्ट चेयरपर्सन लीनेस विनिता जायसवाल ने अपने डिस्ट्रिक्ट प्रोजेक्ट निर्धनों की सेवा के तहत बढ़ती ठंड से बचाव के लिए बरगढ़ में जरूरतमंदों को कम्बल वितरण किया। इस अवसर पर लीनेस सदस्यों विजया जायसवाल, अनीता उपस्थित रहे।

पीएम आवास योजना के अंतर्गत पात्र हितग्राहियों का सर्वे जारी

बलौदा। नगर पंचायत बलौदा में प्रधानमंत्री आवास योजना के तहत पीएम आवास 2.0 का सर्वे शुरू हो गया है। ऑनलाइन एंट्री की जा रही है। विष्णु की पाती(पत्र) सभी हितग्राहियों को भेजा जा रही है, इनका आवास पूर्ण किया जा चुका है।

मुख्य रूप से नगर पालिका अधिकारी आरसी तिवारी, उप अभियंता भुनेश साहू, सीएलटीसी आकाश अग्रवाल, कार्यालय के स्टाफ सुधराम यादव, अजय रगड़े, राजू यादव और वास्तविक महेंद्र आदित्य और उनकी टीम द्वारा कार्य संपादित किया जा रहा है। नगर पंचायत अधिकारी आरसी तिवारी ने बताया कि सभी हितग्राहियों को प्रदेश के मुख्यमंत्री विष्णु देव साय की पाती भेजा जा रहा है। पाती में सीएम ने अपने संदेश में लिखा है कि पक्का

आवास लोगों का एक सपना होता है। यह खुशी प्रधानमंत्री आवास योजना शहरी के माध्यम से मदद मिली। आपका परिवार मकान को केन्द्र में रखकर सुनहरे कल की बुनियाद रखे। उन्होंने आगे लिखा कि इसी तरह की अनेक जनकल्याणकारी योजना का लाभ प्रदेश की जनता को मिलते रहेगा।

दिवंगत शिक्षक को दी 20 हजार की संवेदना राशि

बलौदा। छत्तीसगढ़ टीचर्स एसोसिएशन बलौदा ने शासकीय हाई स्कूल डोंगरी के व्याख्याता एलबी मनोज चंद्राकर का बीते दिनों निधन हो गया था। इस पर 20 हजार 55 रुपए की संवेदना राशि गुरुवार को उनके गृह ग्राम बिरगहनी जाकर उनकी पत्नी सफुरा देवी को प्रदान की गई। शैक्षिक समन्वयक रामायण साहू, प्रधान पाठक तोषराम श्रीवास ने बताया कि शिक्षक साथी के आकस्मिक निधन पर परिजन को आर्थिक सहयोग प्रदान करने के लिए 2015 मे संवेदना योजना शुरू की गई है। अब तक 33 से अधिक दिवंगत शिक्षक साथियों के परिजनों को 15 लाख 20 हजार से अधिक की संवेदना राशि शिक्षकों के सामूहिक सहयोग से एकत्रित कर दी गई है। इस मौके पर नरेश गुरुद्वान, रणजीत डहरिया, अंतराम बंजारे, तोषराम, रामायण साहू, संत कुमार बंजारे, अनिल देवांगन, राजकुमार अनंत, विजय व माता समुंद बाई आदि मौजूद रहे। छत्तीसगढ़ टीचर्स एसोसिएशन बलौदा के ब्लॉक अध्यक्ष नरेश गुरुद्वान ने संवेदना योजना को संघ की संवेदनशील पहल बताया।

10 जनवरी तक 18 वर्ष के होने वाले भी डाल सकेंगे वोट

अकलतरा। नगर पालिका चुनाव के लिए नगर पालिका कार्यालय में नाम जोड़ने नाम में संशोधन करने और नाम कटवाने का सिलसिला जा रही है। इसके लिए कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई है। वे प्रतिदिन सुबह 10 बजे से शाम 5 बजे तक आवेदन ले रहे हैं। 10 जनवरी तक 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुके युवा भी अपना नाम जुड़वाकर मतदान कर सकते हैं।

नगर पालिका में मतदाता सूची का प्रारंभिक प्रकाशन होने के बाद मतदाता सूची में 18 वर्ष की आयु पूर्ण करने वाले नए मतदाताओं का नाम जोड़ने, निर्वाचक नामावली का दावे और आपत्ति के लिए अधिसूचना जारी करने के साथ नगर पालिका कार्यालय में कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई है। लेखापाल अमरदीप विश्वकर्मा द्वारा वार्ड नंबर 1 से 4 तक, सहायक राजस्व निरीक्षक नंदकुमार यादव द्वारा वार्ड क्रमांक 5 से 8 तक, सहायक ग्रेड 3 शेखर उपाध्याय द्वारा वार्ड नंबर 9 से 12 तक, शिव साहू द्वारा वार्ड नंबर 13 से 16 तक और वरदान शुक्ल वार्ड नंबर 17 से 20 तक आवेदन स्वीकार कर रहे हैं।

लेखापाल अमरदीप विश्वकर्मा ने बताया कि नगर पालिका चुनाव के लिए निर्वाचक नामावली तैयार करने के लिए कर्मचारियों की ड्यूटी लगाने के साथ प्रतिदिन नगर पालिका कार्यालय में दावा आपत्ति, नाम संशोधन और 18 वर्ष की आयु पूर्ण कर चुके नए मतदाताओं का नाम जोड़ने के लिए आवेदन पत्र लिए जा रहे हैं। नाम संशोधन करने और दावा आपत्ति प्रस्तुत करने के लिए 6 जनवरी को अंतिम तिथि निर्धारित की गई है। दोपहर 3 बजे तक नगर पालिका कार्यालय में आवेदन पत्र स्वीकार किए जाएंगे। 18 वर्ष की आयु पूर्ण करने वाले नए मतदाता नाम जुड़वाने के लिए 10 जनवरी तक आवेदन पत्र प्रस्तुत कर सकते हैं। नगर पालिका कार्यालय में अब तक 35 आवेदन पत्र प्राप्त हो चुके हैं। 20 वार्डों के लोगों का आवेदन ले रहे राज्य शासन के निर्देश पर निर्वाचक नामावली तैयार करने के लिए पुन: प्रक्रिया प्रारंभ करने के साथ नगर पालिका कार्यालय में कर्मचारियों की ड्यूटी लगाने के साथ नगर के 20 वार्डों के लोगों का आवेदन पत्र स्वीकार किया जा रहा है। नगर पालिका कार्यालय में निर्धारित प्रपत्र में फार्म उपलब्ध होने के साथ फॉर्म भरकर नगर के लोग अपनी दावा आपत्ति प्रस्तुत करने के साथ अन्य सुधार कार्य करवा सकते हैं।

युवा महोत्सव में छात्रों ने गायन, नृत्य शिल्पकला व चित्रकारी में दी प्रस्तुति

रायगढ़। नगर के शहीद कर्नल विप्लव त्रिपाठी स्टेडियम में आयोजित सरस मेला के दूसरे दिन जिला स्तरीय युवा महोत्सव का आयोजन किया गया। इसमें जिले से आए विभिन्न स्कूलों के विद्यार्थियों ने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन किया गया। युवा महोत्सव में विद्यार्थियों ने विभिन्न विधाओं में प्रस्तुतियां दीं। इनमें एकल गीत में प्रथम लता पुरोहित, द्वितीय ख्याति मिरी व तृतीय हुनर डनसेना रहीं। इसी तरह लोकनृत्य(एकल) में प्रथम पुष्पांजलि राठिया, द्वितीय मनीषा चन्द्रा व तृतीय साक्षी चंद्रा, हस्तशिल्प में प्रथम डोलेश्वरी बेहरा, द्वितीय सुनीता तुरी व तृतीय-गोपाल प्रसाद, भाषण में प्रथम सुप्रिया शर्मा, द्वितीय कामिनी प्रधान रहे।

रायगढ़ में अवैध धान से भरा ट्रैक्टर पकड़ाया

रायगढ़। रायगढ़ जिले के हमीरपुर इलाके में एक ट्रैक्टर से 150 बोरी अवैध धान पकड़ा गया है। ट्रैक्टर को मंडी समिति प्रबंधक को सौंप दिया गया है। बताया जा रहा है कि, रविवार को ट्रैक्टर में धान लोड कर खेतवाही से जोबरो की ओर लाया जा रहा था।

इसकी जानकारी जांच टीम को लगी, तो हमीरपुर के पास उसे दौड़ाकर पकड़ा गया। पूछताछ में ट्रैक्टर ड्राइवर जयप्रकाश ने दस्तावेज को लेकर टालमटोल करने लगा। ऐसे में उसे हमीरपुर धान मंडी तक लाया गया। जहां से मौका पाकर ड्राइवर भाग गया।

अवैध धान मंडी को सौंपा गया

बताया जा रहा है कि, अवैध धान को लेकर तीन अलग-अलग मालिकों का नाम सामने आ रहा है। ऐसे में अवैध धान किसका है, यह बात स्पष्ट नहीं हो सका है। जांच टीम ने अवैध धान का पंचनामा कर उसे मंडी सचिव को सौंप दिया है। हमीरपुर क्षेत्र ओडिशा और रायगढ़ जिले का बार्डर होने के कारण आसानी से अवैध धान को खपाने इस ओर लाया जाता है। इससे पहले भी ओडिशा से अवैध धान लोड पिकअप पकड़ा गया था। जो बिजना की ओर जा रही थी।इस मामले में तमनार खाद्य निरीक्षक नरेन्द्र सिंह ने बताया कि, अभी धान किसका है वह स्पष्ट नहीं हो सका है। इस कारण अज्ञात व्यक्ति के नाम से प्रकरण बनाया गया है। मामले में जांच की जा रही है।

हिरण्यकश्यप वध व ध्रुव चरित्र की कथा सुनाई

सक्ती। सक्ती सरजुनी में श्रीमद् भागवत कथा का भव्य आयोजन हुआ। पहले दिन श्रोताओं की भारी भीड़ उमड़ रही है।

भागवत कथा के दूसरे दिन कथावाचक आचार्य राजेंद्र महाराज ने प्रथम स्कंद का व्याख्यान करते बताया भगवान के श्री चरणों में निष्काम भक्ति का उदय होना, भक्ति का फल भगवत प्राप्ति है। जिन मनुष्यों के जीवन में भगवान की प्रधानता है। वही मानव जीवन धन्य है। बिना भगवान के सारा संसार कूड़े-करकट के समान है। संपूर्ण प्राणियों के कल्याण करने के लिए भगवान धरती पर अवतार भी लेते हैं। भागवत भगवान के अवतारों का इतिहास है। आचार्य ने बताया कि राजा परीक्षित ने भी पांडवों द्वारा पराजित और बलपूर्वक राजमुकुट छीन कर धारण कर लिया था इसलिए कलयुग राजा के सिर पर बैठ गया। राजा परीक्षित को शमिक ऋषि के पुत्र श्रृंगी युवा ऋषि ने श्राप दे दिया कि सातवें दिन तक्षक नाग उसे डस देगा और उसकी मृत्यु होगी। राजा परीक्षित की मृत्यु को सुधारने के लिए शुक्रदेव जी

महाराज ने इस संसार का सर्वश्रेष्ठ सत्कर्म, श्रीमद् भागवत कथा सुनाई थी। आचार्य ने अन्य प्रसंग के साथ सृष्टि वर्णन, भगवान की महत्ता, दिति कश्यप संवाद, हिरण्यकश्यप वध और ध्रुव चरित्र की कथा सुनाई। ध्रुव चरित्र प्रसंग का भाव बताते हुए आचार्य ने कहा कि, निष्ठा पूर्वक दृढ़ संकल्प करने से कोई भी काम कठिन नहीं होता। पांच वर्ष के छोटे से बालक ने दृढ़ संकल्प किया कि या तो भगवान का दर्शन करूंगा या फिर इस शरीर का त्याग कर दूंगा, भगवान सदैव अपने भक्त के वशीभूत है। साक्षात् भगवान नारायण मधुबन में आकर अपने प्रिय भक्तों को दर्शन दिए और भगवान की भक्ति का पुण्य फल ध्रुव को दिव्य ध्रुवलोक के रूप में प्राप्त हुआ। भगवान की भक्ति वही करता है जो भगवान से विभक्त नहीं होता, वही भगवान की भक्ति करता है।

e-Paper
www.tarunchhattisgarhkorba.com
कोरबा, सोमवार, 06 जनवरी 2025

अनमोल वचन......

किसी के सामने पैसो का अभिमान ना दिखाए कई आये और निकल गये इस दुनिया से

भारत के सामने नई कूटनीति चुनौती

बांग्लादेश के अनुरोध से भारत को संवेदनशीलता और उच्च कूटनीतिक कौशल से निपटना होगा। भारत सरकार शेख हसीना को अपनी जुबान बंद करने पर राजी करे, तो यह काम आसान हो सकता है। उनके बयानों से बांग्लादेश में माहौल ज्यादा भड़का है। अभी तक बांग्लादेश से भारत के लिए आई चुनौतियां वहां साढ़े चार महीने पहले बने माहौल से संबंधित थीं। मगर अब इसने ठोस कूटनीतिक रूप ले लिया है। भारत सरकार के सामने यह नई कूटनीति चुनौती है। इसका रूप बहुआयामी है। बांग्लादेश की एक अदालत ने पूर्व प्रधानमंत्री शेख हसीना वाजेद पर मानवता के खिलाफ अपराधों के मुकदमे के सिलसिले में वारंट जारी किया। उसका अनुपालन करते हुए बांग्लादेश की अंतरिम सरकार ने भारत को कूटनीतिक पत्र भेज कर शेख हसीना को वापस भेजने की मांग की है। चूंकि दोनों देशों के बीच प्रत्यर्पण संधि पहले से मौजूद है, इसलिए भारत सरकार के लिए इस अनुरोध पत्र को ठुकराना आसान फैसला नहीं होगा।

हालांकि उस संधि में राजनीतिक प्रकार के मामलों में अनुरोध ठुकराने का प्रावधान है और बेशक शेख हसीना का मामला सियासी है, परंतु वैसे कदम का बांग्लादेश से संबंध पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ेगा। पहले ही बांग्लादेश की अंतरिम सरकार पाकिस्तान के साथ अपने रिश्तों को अधिक महत्त्व दे रही है। पिछले हफ्ते काहिरा में डी-8 ग्रुप की बैठक के दौरान बांग्लादेश की अंतरिम सरकार के मुख्य सलाहकार मोहम्मद युनूस पाकिस्तान के प्रधानमंत्री शहबाज शरीफ से मिले। इसमें खास बात यह रही कि शरीफ ने बांग्लादेश से रणनीतिक संबंध बनाने का इरादा जाहिर किया, वहीं युनूस ने बांग्लादेश की पुरानी मांग छोड़ दी कि ऐसा होने के पहले बांग्लादेश के मुक्ति संग्राम के समय किए अत्याचार और मानवता के खिलाफ अपराधों के लिए पाकिस्तान माफी मांगे। परमाणु ऊर्जा क्षेत्र में सहयोग पर दोनों देश पहले ही राजी हो चुके हैं। बांग्लादेश का इस तरह पाकिस्तान से जुड़ना कतई भारत के हित में नहीं है। इससे 1971 के पहले जैसी स्थितियां बन जाएंगी। इसलिए बांग्लादेश के नए अनुरोध से भारत को संवेदनशीलता और उच्च कूटनीतिक कौशल से निपटना होगा। भारत सरकार अगर शेख हसीना को अपनी जुबान बंद करने पर राजी करे, तो यह काम आसान हो सकता है। उनके बयानों से बांग्लादेश में माहौल ज्यादा भड़का है। कोशिश वहां की जन भावनाओं का ख्याल करने की होनी चाहिए। वरना, पूरबी सरहद की तरफ भी पाकिस्तान से जुड़ी चुनौती ठोस रूप ले सकती है।

राशिफल

मेष राशि : आज का दिन आपके लिए फेवरेबल रहने वाला है। माता के स्वास्थ्य में पहले की अपेक्षा सुधार आएगा। साथ ही वे आपसे कुछ डिमांड कर सकती हैं। आज फाइनेंस के मामलों में दिन अच्छा रहेगा। किसी ऐसे परिचित से मुलाकात होगी जिससे आपका मन प्रसन्न रहेगा।

वृष राशि : आज का दिन आपके लिए खुशियां लेकर आया है। आज शुभ समाचार मिलने के योग नजर आ रहे हैं। आज उचित व्यवस्था हो जाने के बावजूद मन में कुछ उलझन बनी रहेगी, अपना मनोबल मजबूत रखें। आज आय के साथ-साथ खर्चे भी बढ़ेंगे। अगर किसी व्यक्ति पर भरोसा करके निर्णय लेने वाले हैं, तो उचित सोच विचार करना जरूरी है, जल्दबाजी ना करें। आज आप खुद को सेहतमंद महसूस करेंगे।

मिथुन राशि : आज का दिन आपके लिए बढ़िया रहने वाला है। आज बड़ों का सानिध्य मिलेगा और घर में सुख सुविधा संबंधी वस्तुओं की खरीदारी भी होगी। किसी प्रतिष्ठित व्यक्ति से मुलाकात के बाद आपको बेहतरीन जानकारियां हासिल होंगी। अगर सरकारी मामला फंसा हुआ है तो उससे संबंधित फैसला आपके पक्ष में होने के योग हैं। आज आप अपने भविष्य को बेहतर बनाने का प्लान बनाएंगे।

कर्क राशि : आज का दिन आपके लिए फेवरेबल रहेगा। आज ऑफिस में आपके परफॉरमेंस की तारीफ होगी। आज बिजनेस के रुके हुए काम पूरे करने में सफलता मिल सकती हैं। कुछ अन्य काम की भी शुरुआत करने की योजना बन रही है तो उस पर भी विचार-विमर्श और अमल करने का उचित समय है। ऑफिस में अपने प्रोजेक्ट संबंधित फाइलें बहुत ही संभालकर रखेंगे। जीवन में खुशियां ही खुशियां आएंगी।

सिंह राशि : आज का दिन व्यस्तता से भरा रहने वाला है। जो लोग स्थान परिवर्तन के लिए इच्छुक हैं, आज उनकी यह इच्छा पूर्ण होने के योग है। आपकी सकारात्मक सोच से आपके व्यक्तित्व में निखार आएगा। पारिवारिक और सामाजिक गतिविधियों में आपका योगदान रहेगा। धार्मिक और आध्यात्मिक गतिविधियों में आपका रुझान बना रहेगा। आज रुके हुए काम पूरे होने की संभावना है।

कन्या राशि : आज आपका दिन बेहतरीन रहने वाला है। आज अचानक आय के नए रास्ते मिलेंगे, जिसका लाभ उठाने में आप सफल होंगे। आज दौड़-भाग रहेगी लेकिन किसी रिश्तेदार या दोस्त की मदद से आपकी हिम्मत और बढ़ेगी। आज आप परिवार की जिम्मेदारी अच्छे से निभा लेंगे। फोन या ईमेल के माध्यम से खास सूचना मिलेगी। संतान की किसी उपलब्धि से मन में प्रसन्नता रहेगी।

तुला राशि : आज का दिन आपके लिए बढ़िया रहने वाला है। आज महत्वपूर्ण निर्णय लेने में दूरदर्शिता बनाए रखें जल्दबाजी करना उचित नहीं है। लोन लेने की योजना बनाई है तो उससे संबंधित अभी और अधिक जानकारियां लेने की जरूरत है। बेवजह की गतिविधियों में समय व्यर्थ न करके अपने कामों में ही व्यस्त रहेंगे।

वृश्चिक राशि : आज आपका दिन उत्तम रहेगा। सार्वजनिक क्षेत्र में आपकी छवि के अनुसार आपको परिणाम मिलेंगे। आपके बिजनेस में उलझने रहेंगी, लेकिन मेहनत से उनको सुलझा लेंगे। किसी भी कार्य में अपने निर्णय को हीप्राथमिकता दें, दूसरों की बातों में आकर अपना नुकसान न करें। आज ऑफिस में कुछ राजनीतिक जैसा माहौल रहेगा।

धनु राशि : आज का दिन आपके लिए उमंग से भरा रहेगा। आज आप नया बिजनेस शुरू करने की प्लानिंग करेंगे। आज किसी काम में की गई मेहनत का उचित परिणाम हासिल होगा। दूसरों से अपना काम निकलवाने में सफल रहेंगे। इस राशि के स्टूडेंट्स को शिक्षा व करियर से संबंधित समस्याओं से राहत मिलेगी।

मकर राशि : आज का दिन आपके लिए बहुत अच्छा रहने वाला है। आज आपकी मेहनत का अच्छा परिणाम आपको मिलेगा आपका आत्मविश्वास बढ़ा रहेगा। आज परिवार में भाई-बहनों से मदद लेनी पड़ सकती हैं। विचार न मिलने की वजह से पड़ोसियों अथवा आसपास के लोगों के साथ सामंजस्य बिठाने में कुछ परेशानी रहेगी। बच्चों की गतिविधियों पर नजर रखेंगे।

कुंभ राशि : आज का दिन आपके लिए शानदार रहने वाला है। आज आपका मन दान-पुण्य में अधिक लगेगा। आज का दिन कुछ व्यस्तता से भरा रहेगा। लेकिन आपके प्रयासों से व्यवस्था बनती जाएगी। किसी काम को पूरा करने में आज दोस्त की मदद मिलेगी। ऑफिस में आज आपको सम्मानित किया जा सकता है।

मीन राशि : आज आपका दिन अनुकूल रहेगा। पिछले कुछ समय से चल रही उलझन से आज राहत मिलेगी। अनुभवी लोगों के सानिध्य में आपको कुछ सकारात्मक अनुभव मिलेंगे। पूरी मेहनत से अपने कामों को अंजाम देगे। साथ ही सामाजिक कामों में आपका रुतबा रहेगा। घर पर रिश्तेदारों की आवा-जाही से खुशनुमा माहौल बनेगा। आपकी आय के साधनों में वृद्धि होगी।

भारत की राजनीति को भाई-भतीजावाद से मुक्ति कैसे

//अजीत द्विवेदी//

नए साल में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का एक प्रमुख लक्ष्य राजनीति को परिवारवाद से मुक्ति दिलाने का होना चाहिए। उन्होंने बड़ी प्रतिबद्धता के साथ यह लक्ष्य तय किया है। परंतु मुश्किल यह है कि राजनीति की ऊपर से नीचे तक सफाई करने और राजनेताओं के ऊपर लंबित मुकदमों को प्राथमिकता के साथ निपटा कर राजनीति को अपराध मुक्त करने का लक्ष्य भी उन्होंने इतनी ही प्रतिबद्धता के साथ तय किया था। बनाने के मामले में अव्वल नहीं है तो किसी से पीछे भी नहीं है। तभी राजनीति को परिवारवाद से मुक्त करने की उनकी प्रतिबद्धता को लेकर भी सवाल उठते हैं और ऐसा लगता है कि भाई-भतीजावाद से भारतीय राजनीति को मुक्ति दिलाने से उनका मतलब सिर्फ नेहरू गांधी परिवार या उनके साथ राजनीतिक गठजोड़ करने वाले कुछ अन्य परिवारों को राजनीति में हाशिए पर ले जाना या उनको चुनाव हराना है।

इसके बावजूद अगर नए साल के दूसरे दिन हम इस सवाल पर चर्चा कर रहे हैं कि भारत की राजनीति को भाई-भतीजावाद से मुक्ति कैसे मिलेगी तो प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के घोषित लक्ष्य के साथ साथ इसका एक दूसरा कारण यह है कि सुप्रीम कोर्ट के नए चीफ जस्टिस संजीव खन्ना ने भारत की शीर्ष न्यायपालिका को परिवारवाद से मुक्ति दिलाने की योजना बनाई है। हालांकि अभी तक इस बारे में आधिकारिक जानकारी नहीं दी गई है लेकिन जो खबर आई है उसके मुताबिक चीफ जस्टिस संजीव खन्ना ने कहा है कि हाई कोर्ट्स और सुप्रीम कोर्ट में ऐसे लोगों को जज नहीं बनाया जाएगा, जिनके परिवार के लोग जज रहे होंगे।

बताया जा रहा है कि उन्होंने हाई कोर्ट्स की कॉलेजियम को निर्देश भेजा है कि वे ऐसे वकीलों के नाम जज के लिए नहीं भेजें, जिनके परिवार के लोग जज रहे हों। उन्होंने यह भी कहा है कि पहली पीढ़ी के वकीलों में जो अच्छा कर रहे हों उनके नाम की सिफारिश की जाए। इसका मतलब है कि उच्च अदालतों की कॉलेजियम से हाई कोर्ट में जज बनने के लिए पहली पीढ़ी के वकीलों या निचली अदालत के पहली पीढ़ी के जजों के नाम की ही सिफारिश की जाएगी। जब चीफ जस्टिस ने उच्च अदालतों की कॉलेजियम को यह निर्देश दिया है तो निश्चित रूप से सुप्रीम कोर्ट की कॉलेजियम भी इस सिद्धांत पर काम करेगी और पहली पीढ़ी के वकीलों या उच्च अदालतों के पहली पीढ़ी के जजों के नाम की सिफारिश ही सुप्रीम कोर्ट के जज के लिए करेगी।

यह बहुत बेहतरीन और न्यायपालिका की शुचिता और उसके गौरवशाली भविष्य के प्रति आश्वस्ति दिलाने वाली पहल है। इसके बारे में जानना इसलिए भी बहुत सुखद अनुभूति देने वाला है क्योंकि चीफ जस्टिस संजीव खन्ना खुद ही ऐसे परिवार से आते हैं, जिस परिवार के लोग हाई कोर्ट और सुप्रीम कोर्ट में जज रहे हैं। चीफ जस्टिस संजीव खन्ना के पिता जस्टिस देवराज खन्ना दिल्ली हाई कोर्ट में जज थे और उनके चाचा जस्टिस हंसराज खन्ना सुप्रीम कोर्ट में जज थे।

जस्टिस हंसराज खन्ना अपने जीवन काल में ही लीजेंड बन गए थे। उन्होंने इमरजेंसी के समय एडीएम जबलपुर केस में यह फैसला लिखा था कि कोई भी सरकार या कोई भी कानून किसी व्यक्ति से सम्मान से जीने का अधिकार नहीं छीन सकता है क्योंकि यह अधिकार व्यक्ति को किसी संविधान ने नहीं दिया है, बल्कि संविधान की व्यवस्था के पहले से व्यक्ति इस अधिकार के साथ पैदा होता है।

पांच जजों की बेंच में वे अकेले जज थे, जिन्होंने यह फैसला लिखा था और इसकी कीमत उन्हें चीफ जस्टिस की कुर्सी से महरूम होकर चुकानी पड़ी थी। फैसले से नाराज इंदिरा गांधी ने वरिष्ठता में नंबर दो जज हंसराज खन्ना की बजाय चौथे नंबर के जज एमएच बेग को चीफ जस्टिस बनाया और विरोध में जस्टिस खन्ना ने इस्तीफा दे दिया था। सो, इसे प्रकृति का न्याय कह सकते हैं कि जस्टिस हंसराज खन्ना के भतीजे संजीव खन्ना देश के चीफ जस्टिस बने हैं और उन्होंने यह पहल की है कि जजों के परिजनों के नाम की सिफारिश जजशिप के लिए नहीं की जाएगी।

उन्होंने एक दूसरी पहल भी है कि और वह भी बहुत शानदार है। बताया जा रहा है कि उन्होंने तय किया है कि हाई कोर्ट्स या सुप्रीम कोर्ट में जज के लिए किसी के नाम की सिफारिश करने से पहले कॉलेजियम उससे मिलेंगे और बात करेंगे। जिसे जज बनाया जाना है उससे मिलना और उसके विचारों को समझने का प्रयास करना एक बेहद जरूरी पहल है, जो चीफ जस्टिस संजीव खन्ना करते दिख रहे हैं।

ध्यान रहे पिछले कुछ समय से देश की उच्च न्यायपालिका की इस बात के लिए आलोचना होती रही है कि जजों की नियुक्ति और तबादले के लिए कॉलेजियम की व्यवस्था इसलिए बनाए रखी गई है ताकि जजों के बच्चों को जज बनाया जा सके। नरेंद्र मोदी सरकार के पहले कार्यकाल में लाए गए राष्ट्रीय न्यायिक नियुक्ति आयोग के गठन के कानून को अदालत द्वारा खारिज किए जाने को इसी नजरिए से देखा जाता है।

इस धारणा को बदलने और न्यायपालिका को भाई-भतीजावाद से मुक्त करने की लिए चीफ जस्टिस ने जो पहल की है उसी से यह विचार उठा है कि क्या इसी तरह से राजनीति को भाई-भतीजावाद से मुक्त किया जा सकता है। क्या प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इससे सूत्र पकड़ कर आगे बढ़ सकते हैं। राजनीति और न्यायपालिका का मामला निश्चित रूप से बिल्कुल अलग है लेकिन इसे आधार बना कर एक छोटी पहल तो निश्चित रूप से की जा सकती है।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा है कि एक लाख युवाओं को राजनीति में लाना है और उन्हें आगे के लिए तैयार करना है। उन्होंने लाल किले से अपने भाषण में यह बात कही थी और उसके बाद से करीब पांच महीने बीत गए हैं। लेकिन ऐसा कहीं दिख नहीं रहा है कि भाजपा पढ़े लिखे, आदर्शवादी और जन कल्याण के लिए प्रतिबद्ध युवाओं की पहचान करके उनको राजनीति में आगे बढ़ाने की कोई पहल कर रही है।

इसलिए प्रधानमंत्री की बात अभी तो धरातल पर उतरने वाली नहीं दिख रही है। लेकिन जिस तरह की पहल चीफ जस्टिस ने सुप्रीम कोर्ट में की है उस तरह की पहल प्रधानमंत्री मोदी सरकार में कर सकते हैं। वे इस बात से शुरुआत कर सकते हैं कि जिन लोगों के पिता या परिवार के दूसरे सदस्य राज्य या केंद्र में मंत्री रहे हैं उनको मंत्री नहीं बनाया जाएगा। यानी जिस तरह से न्यापालिका में पीढ़ी दर पीढ़ी लोग जज होते रहे हैं और उसे रोकने का प्रयास हो रहा है उसी तरह पीढ़ी दर पीढ़ी मंत्री हो रहे लोगों को राजनीति में रोका जाए।

यह एक छोटी शुरुआत होगी लेकिन इसका संदेश बहुत बड़ा होगा। अगर यह सुनिश्चित कर दिया जाए कि जिनके परिवार का कोई सदस्य मंत्री रहा है वह मंत्री नहीं बनेगा और जिनके परिवार के लोग मुख्यमंत्री रहे हैं वे मुख्यमंत्री नहीं बन सकते हैं तो यह भारतीय राजनीति में परिवारवाद के अंत की शुरुआत हो जाएगी। इससे नए लोगों में या पहली पीढ़ी के राजनेताओं में बेहतर करने की आकांक्षा जगेगी, प्रतिस्पर्धा बढ़ेगी और अच्छे लोग राजनीति की ओर आकर्षित होंगे। यह प्रधानमंत्री का विशेषाधिकार होता है और इसमें कोई संवैधानिक प्रावधान बाधा भी नहीं बनेगा।

इसके बाद सभी पार्टियां इस सिद्धांत को लागू कर सकती हैं। कानून बना कर रोकने की बजाय पार्टियां यह परंपरा बना सकती हैं कि पहले मंत्री रहे लोगों के परिवार से किसी को मंत्री नहीं बनाएंगी और सांसदों व विधायकों के परिवार के सदस्यों को चुनाव लडने की टिकट नहीं देंगी। हालांकि यह एक आदर्श की बात है और राजनीति व आदर्श एक दूसरे के विरोधी विचार हैं, इसलिए बहुत उम्मीद तो नहीं की जा सकती है। परंतु प्रधानमंत्री मोदी प्रतिबद्धता जता रहे हैं और चीफ जस्टिस ने एक पहल की है तो नए साल के मौके पर उम्मीद जताने में कोई समस्या भी नहीं है।

कांग्रेस को कार्यशैली बदलने की जरुरत

//अजीत द्विवेदी//

नए साल 2025 को कांग्रेस ने संगठन में बदलाव और मजबूती वाला साल कहा है। कर्नाटक के बेलगावी में 26 दिसंबर को आयोजित कांग्रेस कार्यसमिति की विशेष बैठक में पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खडगे ने कहा कि नए साल में कांग्रेस संगठन में बदलाव करेगी और उसे मजबूत बनाने के लिए काम करेगी। इसका एक प्रत्यक्ष अर्थ तो यह दिखाई देता है कि कांग्रेस अध्यक्ष को कहीं न कहीं इस बात का अंदाजा है कि कांग्रेस का संगठन मजबूत नहीं है और लगातार हो रही चुनावी हार के पीछे यह एक कारण है। अगर देश की मुख्य विपक्षी पार्टी संगठन को मजबूत करने के लिए काम करती है तो यह लोकतंत्र के लिए भी अच्छा होगा।

परंतु सवाल है कि कांग्रेस अध्यक्ष ने किस तरह के बदलाव की बात की और संगठन को मजबूत करने के लिए किस तरह की पहल की योजना उनके पास है। यह सवाल इसलिए है क्योंकि संगठन में बदलाव का शाब्दिक अर्थ तो यह है कि नए चेहरे लाना और नए लोगों को जिम्मेदारी देना। लेकिन कांग्रेस संगठन की समस्या यह नहीं है। सिर्फ चेहरे बदल देने से कांग्रेस के संगठन में मजबूती नहीं आने वाली है। मजबूती के लिए चेहरों के साथ साथ पूरी कार्यशैली को बदलने की जरुरत होगी। क्या कांग्रेस उसके लिए तैयार है।

अगर शाब्दिक अर्थों में कांग्रेस के संगठन में बदलाव की बात करें तो वह भी बहुत जरूरी है क्योंकि मोटे तौर पर कांग्रेस का संगठन, खासकर प्रदेशों में बहुत कमजोर है या है ही नहीं। यह सचमुच हैरान करने वाली बात है कि कई राज्यों में कांग्रेस का संगठन ही नहीं है। जैसे ओडिशा में छह महीने से कांग्रेस कमेटी नहीं है। लोकसभा और विधानसभा चुनावों में बेहद खराब प्रदर्शन के बाद कांग्रेस के राष्ट्रीय अध्यक्ष ने जुलाई में ओडिशा की प्रदेश कमेटी भंग कर दी थी। इसके तीन महीने बाद छत्तीसगढ़ कांग्रेस विधायक दल के नेता चरणदास महंत की अध्यक्षता में ओडिशा में कांग्रेस नेतृत्व व संगठन की मजबूती के बारे में सुझाव देने के लिए एक कमेटी बनी थी। अभी तक उसकी रिपोर्ट नहीं आई है।

सो, छह महीने से ओडिशा में संगठन नहीं है। इसी तरह नवंबर के पहले हफ्ते में यानी दो महीने पहले हिमाचल प्रदेश कांग्रेस कमेटी को भंग कर दिया गया। पार्टी के संगठन महासचिव केसी वेणुगोपाल ने आदेश जारी किया और प्रदेश से लेकर जिला व प्रखंड स्तर तक की सारी कमेटियां भंग कर दी गईं। इसके एक महीने बाद यानी दिसंबर में उत्तर प्रदेश में प्रदेश से लेकर जिला व प्रखंड तक की कमेटियां भंग कर दी गईं।

विधानसभा चुनाव के नतीजों के बाद महाराष्ट्र व हरियाणा में भी प्रदेश कांग्रेस कमेटी भंग करने की बात चली है। इतना ही नहीं बिहार में करीब दो साल से प्रदेश कमेटी का गठन ही नहीं हुआ है। सितंबर में शुभंकर सरकार पश्चिम बंगाल कांग्रेस के अध्यक्ष बने लेकिन उनकी भी कमेटी नहीं बन पाई है। झारखंड में विधानसभा चुनाव से ठीक पहले अध्यक्ष बने केशव महतो कमलेश भी अपनी कमेटी नहीं बना पाए हैं। सो, बदलाव का एक मतलब तो यह है कि जिन राज्यों में संगठन भंग कर दिया गया है वहां नए अध्यक्ष की नियुक्ति हो और प्रदेश से लेकर जिला व प्रखंड स्तर तक कांग्रेस कमेटियों का गठन हो।

दूसरा मतलब यह है कि जिन राज्यों में अध्यक्ष बन गए हैं लेकिन महीनों से उनकी कमेटियों का गठन नहीं हो पाया है वहां नई कमेटियों का गठन किया जाए और तीसरा अर्थ यह है कि जिन राज्यों में कांग्रेस हाल में हारी है वहां अगर बदलाव करना है तो वह जल्दी हो ताकि पार्टी का संगठन काम शुरू कर सके। कुछ राज्यों में कांग्रेस को संगठन के साथ साथ और भी फैसले करने हैं। जैसे कांग्रेस ने हरियाणा और महाराष्ट्र में विधायक दल के नेता का नाम तय नहीं किया है। सोचें, पार्टी चुनाव हार गई या अनुकूल फैसला नहीं आया तो विधायक दल का नेता ही तय नहीं करेंगे।

अगर बदलाव के शाब्दिक अर्थ से अलग हट कर देखेंगे तो कांग्रेस को संगठन की मजबूती के लिए बहुत कुछ करना है। सिर्फ नए अध्यक्ष बना देने या नई कमेटियों का गठन कर देने से कांग्रेस का काम नहीं चलने वाला है। उसे संगठन की कार्यशैली में आमूलचूल बदलाव की जरुरत है। मल्लिकार्जुन खडगे ने बेलगावी अधिवेशन में इसी तरफ इशारा किया। लेकिन क्या वे इस तरह का बदलाव करने में सक्षम हैं। क्या कांग्रेस अध्यक्ष खडगे और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी कांग्रेस के पुराने और मजबूत नेताओं को नाराज करने का जोखिम लेकर संगठन को नया स्वरूप दे सकते हैं। असल में कांग्रेस सत्तारूढ़ दल की कार्य संस्कृति के दुष्चक्र में फंस गई है, जिसे प्रतीकित करने वाले सूत्र वाक्य कांग्रेस की एक महिला नेत्री ने कहा था, जो अब पार्टी छोड़ कर चली गई हैं।

उन्होंने कहा था कि, कांग्रेस सत्ता में रहती है या सत्ता के इंतजार में रहती है'। यही कारण है कि कांग्रेस कभी विपक्ष की पार्टी के तौर पर प्रभावी तरीके से काम नहीं कर पाती है। केंद्र से लेकर प्रदेश और जिला स्तर तक के नेता यह मानते हैं कि सत्ता उनका अधिकार है और अभी जो लोग सत्ता में हैं उनको राज करना नहीं आता है। वे अपनी गलतियों के चलते सत्ता से विदा हो जाएंगे और तब कांग्रेस को सत्ता मिल जाएगी। इस मानसिकता की वजह से कांग्रेस अपने संगठन को सड़क पर उतर कर सत्तापक्ष से लडने वाली मजबूती नहीं दे पाती है।

संगठन के मामले में कांग्रेस की दूसरी कमजोरी यह है कि उसके शीर्ष नेताओं का पार्टी के कार्यकर्ताओं और प्रदेश, जिला व प्रखंड स्तर के पदाधिकारियों से संवाद खत्म हो गया है। पार्टी का शीर्ष नेतृत्व, प्रदेश की रिपोर्ट सिर्फ प्रभारी महासचिव से लेता है और ज्यादा से ज्यादा प्रदेश अध्यक्ष से बात करता है। कहने का आशय यह है कि कांग्रेस का शीर्ष नेतृत्व अपने आइवरी टावर में बंद है, जहां तक पार्टी कार्यकर्ताओं, नेताओं, पदाधिकारियों की आवाज नहीं पहुंच पाती है।

राहुल गांधी का सब्जी मंडी जाना, मोटर गैरेज में जाना या ट्रक ड्राइवरों से मिलना, राजनीति नहीं है, बल्कि राजनीतिक सक्रियता का दिखावा है, प्रदर्शन है। असल में यह भारतीय राजनीति की बहुत बड़ी समस्या है कि राजनीति अब एक प्रदर्शन कला में बदल गई है। यह परफॉर्मिंग आर्ट में तब्दील हो गई है। सच्ची राजनीति परदे के पीछे होती है, जिसमें मूल तत्व विचार विमर्श, संवाद, मोलभाव, समझौते और समस्याओं को सुलझाने की सामूहिक कोशिशें शामिल होती हैं, उसकी जगह सार्वजनिक स्पेस में नेताओं की परफॉरमेंस ने ले ली है। कांग्रेस इस समस्या से ज्यादा ग्रस्त है। इसका नतीजा यह हुआ है कि राहुल गांधी कहीं किसानों, मजदूरों, ऑटो वालों आदि से मिल कर ग्रैंड परफॉरमेंस कर देते हैं और समझा जाता है कि कांग्रेस का जमीनी कनेक्ट का काम पूरा हो गया, जबकि इससे असल में कुछ नहीं होता है।

कांग्रेस को जनता से कनेक्ट और संवाद का पुराना तरीका विकसित करना होगा। पार्टी कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों की बात शीर्ष नेताओं को सुननी होगी। एक जमाना था, जब कांग्रेस के संगठन महासचिव चाहे वह ऑस्कर फर्नांडीज हों या जनार्दन द्विवेदी वे अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के मुख्यालय में बैठते थे। पार्टी के नेता सहज रूप से उनसे मिल सकते थे। उनकी बातें सुनी जाती थी और उनकी फीडबैक के आधार पर पार्टी फैसले करती थी। यह सही है कि अहमद पटेल लोगों से नहीं मिलते थे लेकिन वे कांग्रेस अध्यक्ष के सलाहकार थे, संगठन महासचिव नहीं थे। अब जिन पर राहुल गांधी को सबसे ज्यादा भरोसा है वे बनाए गए हैं संगठन महासचिव लेकिन रंग ढंग अहमद पटेल वाले हैं। इसका नतीजा यह है कि मल्लिकार्जुन खडगे, राहुल गांधी, प्रियंका गांधी वाड्रा और केसी वेणुगोपाल आम कांग्रेसी की पहुंच से बहुत दूर हो गए हैं। ये लोग महासचिवों की बात सुनते हैं और महासचिव वही बात सुनाते हैं, जिसमें उनका अपना कुछ फायदा निहित हो। इस कार्य संस्कृति में बदलाव करके ही कांग्रेस पार्टी संगठन को मजबूत कर सकेगी। अन्यथा इनकी जगह उनको प्रदेश अध्यक्ष और इनकी जगह उनको महासचिव बना देने से कांग्रेस का कुछ भी भला नहीं होने वाला है।

तस्वीरों की दुनिया

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह ने वरिष्ठ भाजपा नेता मुरली मनोहर जोशी को जन्मदिन की शुभकामनाएं देने के लिए नई दिल्ली स्थित उनके आवास पर पहुंचे।

रोहिणी के स्वर्ण जयंती पार्क में एक सार्वजनिक बैठक के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय मंत्री मनोहर लाल खट्टर, दिल्ली भाजपा अध्यक्ष वीरेंद्र सचदेवा और अन्य नेता।

मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री मोहन यादव उज्जैन के मुंगी चौराहे पर राहगीरी आनंद उत्सव के उद्घाटन के दौरान घोड़े पर सवार हुए।

उपराष्ट्रपति जगदीप धनखड़ अपनी पत्नी सुदेश धनखड़ के साथ नई दिल्ली में दिल्ली छावनी में एनसीसी गणतंत्र दिवस शिविर-2025 के उद्घाटन के दौरान ध्वज क्षेत्र का दौरा करते हुए।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी साहिबाबाद आरआरटीएस स्टेशन से न्यू अशोक नगर आरआरटीएस स्टेशन तक नमो भारत ट्रेन की सवारी करते हुए।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने साहिबाबाद आरआरटीएस स्टेशन से न्यू अशोक नगर आरआरटीएस स्टेशन तक नमो भारत ट्रेन की सवारी की।

नरेंद्र मोदी ने साहिबाबाद और न्यू अशोक नगर के बीच दिल्ली-मेरठ नमो भारत कॉरिडोर के 13 किलोमीटर लंबे अतिरिक्त खंड का उद्घाटन कर दिया है। इसके बाद पीएम ने क्यूआर कोड स्कैन कर ट्रेन का टिकट लिया।

कैसे बढ़े रोजगार : उद्योग संगठन ने केंद्र सरकार को दिए ये सात सुझाव

नईदिल्ली, 06 जनवरी [एजेंसी]।

उद्योग संगठन सीआईआई ने कहा है कि आगामी बजट में रोजगार सृजन को बढ़ावा देने के लिए और उपायों का ऐलान किया जा सकता है। संगठन ने कहा कि युवा आबादी को उत्पादन से जोड़ने और दुनिया के सबसे अधिक आबादी वाले देश में समावेशी विकास को बढ़ावा देने के लिए बड़े पैमाने पर रोजगार सृजन महत्वपूर्ण है। उद्योग संगठन ने रोजगार सृजन के लिए सात सूत्री एजेंडा भी सुझाया है, जिसमें एकीकृत राष्ट्रीय रोजगार नीति, श्रम आधारित सेक्टरों को समर्थन सहित एक इंटरनेशनल मोबिलिटी अथॉरिटी की स्थापना शामिल है। केवल 29 वर्ष की औसत आयु के साथ भारत एक सबसे युवा देश है और 2050 तक इसकी कार्यशील आयु वाली आबाद में 13.3 करोड़ लोग जुड़ने वाले हैं। सीआईआई ने कहा कि सरकार कालेज से पढ़कर निकले युवाओं को प्रशिक्षित करने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में स्थित सरकारी कार्यालयों में इंटर्नशिप कार्यक्रम शुरू करने पर विचार कर सकती है।संगठन का कहना है कि अगर ऐसा किया जाता है तो यह पहल शिक्षा और पेशेवर कौशल के बीच की खाई को पाटते हुए सरकारी कार्यालयों में अल्पकालिक रोजगार के अवसर पैदा करेगी। सीआईआई ने नए रोजगार को प्रोत्साहित करने के लिए आयकर नियम की धारा 80जेजेएए के बदले एक नया प्रविधान शुरू करने का भी प्रस्ताव दिया है।साथ ही संगठन ने एक एकीकृत राष्ट्रीय रोजगार नीति लाने का भी प्रस्ताव दिया गया है, जिसमें विभिन्न मंत्रालयों और राज्यों द्वारा वर्तमान में चलाई जा रही रोजगार सृजन योजनाओं को मिला दिया जाए। इसके अलावा एकीकृत रोजागर पोर्टल-राष्ट्रीय करियर सेवा (एनसीएस) पर भी एक नीति बनाई जा सकती है, जिसमें विभिन्न मंत्रालयों और राज्य पोर्टलों से सभी डेटा इसमें प्रवाहित हो सकते हैं।

सीआईआई ने कार्यबल में महिलाओं की भागीदारी को बढ़ावा देने के लिए सीएसआर फंड के उपयोग को लेकर भी कुछ सुझाव दिए हैं। संगठन ने कहा कि इस फंड का उपयोग करके डारमेट्री का निर्माण और औद्योगिक क्लस्टरों में सरकार द्वारा समर्थित क्रेच स्थापित करने सहित नई पहल की जा सकती है। ऐसा करने से महिला श्रम शक्ति की भागीदारी को बढ़ाया जा सकता है। इसके अलावा, गिग और प्लेटफॉर्म श्रमिकों को सामाजिक सुरक्षा कवरेज सुनिश्चित करते हुए श्रम संहिताओं को लागू करने से रोजगार परिदृश्य को और मजबूती मिलेगी।

श्रीनगर में इलेक्ट्रिक ब्लोअर ने पूरे परिवार की ले ली जान, सीएम उमर अब्दुल्ला ने घटना पर जताया शोक

जम्मू। श्रीनगर के पांडेरेथान इलाके में रविवार देर शाम को एक एक दिल दहला देने वाली घटना सामने आई। इसमें एक ही परिवार के पांच सदस्यों की दम घुटने से दर्दनाक मौत हुई है। मरने वालों में एक दंपत्ति और उनके तीन बच्चे शामिल हैं। इस घटना पर मुख्यमंत्री उमर अब्दुल्ला और उपराज्यपाल मनोज सिन्हा ने भी शोक जताया है। मनोज सिन्हा ने सोशल मीडिया हैंडल पर पोस्ट करते हुए लिखा,श्रीनगर में एक दुखद घटना में बहुमूल्य जिंदगियों की हानि से दुखी हूं। दुख की इस घड़ी में शोक संतप्त परिवार के प्रति मेरी गहरी संवेदना है। मृतकों की पहचान 38 वर्षीय एजाज अहमद भट, 32 वर्षीय उनकी पत्नी सलीमा, और उनके तीन बच्चों तीन वर्षीय अरीब, 18 महीनों का हमजा और एक महीने के नवजात लड़के के रूप में की है। अभी तक महली जानकारी के अनुसार परिवार श्रीनगर के बाहरी इलाके पांडेरेथान इलाके के शेख मोहल्ले में एक दंपति और उनके तीन बच्चे किराए के मकान में रहते थे। रविवार सुबह से घर से कोई हलचल नहीं होने पर पड़ोसियों ने पुलिस अधिकारियों को सूचित किया।

जैसे ही पुलिस की टीम मौके पर पहुंची और उन्होंने घर के दरवाजे तोड़े तो परिवार के सभी पांच सदस्य अंदर बेहोश थे। आपातकालीन टीमों और पुलिस ने सभी को तुरंत नजदीकी अस्पताल में पहुंचाया पर सभी पांचों को मृत घोषित कर दिया गया। पुलिस के अनुसार मृतक परिवार बारामुला का रहने वाला था और यहां किराये के मकान पर रहता था। पुलिस अधिकारी के अनुसार मृत व्यक्तियों के बंद कमरे में एक इलेक्ट्रिक ब्लोअर पाया गया।

कोहरे और धुंध से 15 घंटे लेट हुई एक्सप्रेस, वंदे भारत के भी लगे ब्रेक

देरी से बचने के लिए इन ट्रेनों को करें अवॉइड

चंडीगढ़, 06 जनवरी [एजेंसी]।

चंडीगढ़ रेलवे स्टेशन पर धुंध और कोहरे की वजह से ट्रेनों का परिचालन बुरी तरह प्रभावित हो रहा है। देश की सबसे तेज वंदे भारत ट्रेन से लेकर अन्य प्रमुख ट्रेनों तक, सभी निर्धारित समय से घंटों देरी से चल रही हैं। यात्रियों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ रहा है, क्योंकि ट्रेनों की देरी का अंतर 3 घंटे से लेकर 15 घंटे तक है। जानकारी के मुताबिक, दिल्ली से वाया चंडीगढ़ होकर अंब अंदौरा जाने वाली वंदे भारत ट्रेन (गाड़ी संख्या 22447) जो सुबह 8.40 बजे चंडीगढ़ पहुंचनी थी, वह दोपहर 12.30 बजे स्टेशन पहुंची। वापसी में भी यह ट्रेन तीन घंटे की देरी से दिल्ली के लिए रवाना हुई।दूसरी ओर, प्रयागराज से चंडीगढ़ आने वाली ट्रेन (गाड़ी संख्या 14217) 15 घंटे की भारी देरी से चंडीगढ़ पहुंची। यह ट्रेन सामान्य तौर पर सुबह 9.15 बजे चंडीगढ़ पहुंचती है, लेकिन कोहरे के कारण यह निर्धारित समय से बेहद पीछे रही।लखनऊ और अन्य प्रमुख ट्रेनों का भी हाल बुराचंडीगढ़ से लखनऊ जाने वाली ट्रेन (गाड़ी संख्या 12232) जो रात 10 बजे रवाना होती है, वह भी तीन घंटे की देरी से रात 1 बजे रवाना होगी। हावड़ा-कालका एक्सप्रेस पांच घंटे 30 मिनट, अजमेर गरीब रथ दो घंटे, इंदौर एक्सप्रेस छह घंटे और पश्चिम एक्सप्रेस तीन घंटे 30 मिनट की देरी से चंडीगढ़ पहुंची। धुंध और खराब मौसम के कारण चंडीगढ़ रेलवे स्टेशन पर लगभग सभी ट्रेनें लेट हो रही हैं। इससे यात्रियों को लंबा इंतजार करना पड़ रहा है। प्लेटफार्म पर भीड़ बढ़ गई है, और यात्रियों को समय पर जानकारी न मिलने से परेशानी हो रही है। रेलवे अधिकारियों का कहना है कि खराब मौसम के कारण ट्रेनों का शेड्यूल बिगड़ रहा है जिससे यात्रियों को परेशानी हो रही है। स्थिति को सुधारने के प्रयास किए जा रहे हैं।वहीं यात्रियों की शिकायत है कि उन्हें सही समय पर ट्रेनों की स्थिति की जानकारी दी जाए ताकि वे अपनी यात्रा की बेहतर योजना बना सकें। मौसम विभाग ने फिलहाल कोहरे के बने रहने की संभावना जताई है, जिससे आने वाले दिनों में ट्रेनों की लेट-लतीफी जारी रह सकती है।

उत्तर भारत में जारी रहेगी कड़ाके की ठंड, 50 उड़ानें रद

नई दिल्ली 06 जनवरी। घने कोहरे और कड़ाके ठंड से रविवार को भी पूरे उत्तर भारत में जनजीवन प्रभावित रहा। दिल्ली और एनसीआर में रविवार सुबह साढ़े तीन घंटे तक कोहरे की चादर लिपटी रही, जिसके कारण कई क्षेत्रों में दृश्यता शून्य रही। इससे हवाई सेवा और रेलवे दोनों प्रभावित हुए।दिल्ली के आईजीआई एयरपोर्ट पर सुबह चार बजे से साढ़े सात बजे तक दृश्यता शून्य होने से उड़ानें प्रभावित रहीं। रविवार को दिल्ली का न्यूनतम तापमान सामान्य से तीन डिग्री अधिक 9.4 डिग्री सेल्सियस था।

इस्लामोफोबिया की परिभाषा की योजना रद करें कीर स्टारमर, विपक्षी कंजर्वेटिव पार्टी ने उठाई मांग

लंदन। ब्रिटेन की विपक्षी कंजर्वेटिव पार्टी प्रधानमंत्री कीएर स्टार्मर से इस्लामोफोबिया की आधिकारिक परिभाषा से संबंधित सरकारी योजना को रद करने की मांग कर रही है। विपक्षी दल को आशंका है कि संबंधित योजना से गलत कामों के खिलाफ कार्रवाई और अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर रोक लग जाएगी।छाया न्याय मंत्री रॉबर्ट जेनरिक ने इस सप्ताह के अंत में कहा कि इस्लामोफोबिया के झूठे ठप्पे से बच्चों का शोषण करने वाले गिरोह के खिलाफ जांच में बाधा उत्पन्न हुई, जिसमें पाकिस्तानी पुरुष शामिल थे।

यह बयान तब आया जब डेली टेलीग्राफ अखबार ने दावा किया कि लेबर पार्टी सरकार मुस्लिम विरोधी भेदभाव की औपचारिक परिभाषा पर विचार कर रही है। जेनरिक ने अखबार से कहा कि सरकार को इस्लामोफोबिया की इतनी गहरी त्रुटिपूर्ण परिभाषा की अपनी योजना छोड़ देनी चाहिए। बच्चों का शोषण करने वाले गिरोह के खिलाफ जांच के दौरान लोगों को चुप कराने के लिए इस्लामोफोबिया के झूठे लेबल का इस्तेमाल किया गया।

गर्भवती है इसलिए... दुष्कर्म पीड़िता की जबरदस्ती आरोपी से रचाई गई शादी , लड़की के परिवारवालों के दावे से मची सनसनी

भदोही, 06 जनवरी [एजेंसी]।

उत्तर प्रदेश में एक व्यक्ति ने 19 साल की लड़की के साथ कई बार दुष्कर्म को अंजाम दिया । पीड़िता के परिवार ने आरोप लगाया है कि जब वे इस मामले के खिलाफ शिकायत दर्ज कराने पुलिस के पास पहुंचे तो पुलिस ने लड़की की शादी आरोपी से कराने पर मजबूर किया। पुलिस अधीक्षक मीनाक्षी कात्यायन ने एफआईआर के हवाले से बताया कि आरोपी आरोपी साजिद अली (उम्र करीब 35 वर्ष) ने कोतवाली क्षेत्र के एक महिला से दोस्ती की और उसके घर आना-जाना शुरू कर दिया। पिछले साल 10 मार्च को साजिद ने महिला के साथ दुष्कर्म किया। दोनों घर में अकेले थे। साजिद ने महिला का वीडियो भी बना लिया। वहीं, उसने लड़की को धमकी दी कि अगर उसने कोई शिकायत की तो उसका वीडियो लीक कर दिया जाएगा। डर की वजह से महिला चुप रही। इसके बाद कई बार साजिद ने महिला का यौन उत्पीड़न किया, जिसकी वजह से वो गर्भवती हो गई।जब महिला के शरीर में परिवर्तन हुए तो उसके माता-पिता ने उससे पूछताछ की, जिसके बाद पीड़िता ने सारी सच्चाई बताई।

जब पीड़िता के माता पिता साजिद की शिकायत लेकर पुलिस थाने पहुंचे तो पुलिस वालों ने कहा कि वो लड़की की शादी साजिद से करा दें क्योंकि पीड़िता गर्भवती है। पुलिस ने शादी के लिए माता-पिता को राजी भी करवा लिया। इसके बाद अक्टूबर में पता चला कि साजिद पहले से ही शादीशुदा है। 26 नवंबर को महिला ने एक प्राइवेट अस्पताल में एक मृत बच्चे को जन्म दिया। कई महीनों तक मानसिक और शारीरिक कष्ट सहने वाली महिला ने आखिरकार 3 जनवरी को लिखित शिकायत दर्ज करवाते हुए कार्रवाई की मांग की।

डिजिटल कंपनियों के लिए बड़ी राहत, केंद्र सरकार ने हटाई ये अड़चन, अमेरिका समेत कई देशों ने उठाया था मुद्दा

नईदिल्ली, 06 जनवरी [एजेंसी]।

भारत में डिजिटल सेवा देने वाली ई-कॉमर्स, ई-गेमिंग या सोशल मीडिया कंपनियां पर अपने ग्राहकों के पर्सनल डाटा को भारत में ही रखने की कोई बाध्यता नहीं होगी। वैसे इस तरह की बाध्यता अभी भी नहीं है।अगस्त, 2023 में केंद्र सरकार की तरफ से संसद में पारित डिजिटल पर्सनल डाटा प्रोटेक्शन एक्ट (डीपीडीपी) के जो नियम अब सामने आये हैं, उसमें कहा गया है कि डीपीडीपी कानून में कंपनियों पर सारे पर्सनल डाटा को भारत में रखने की कोई बाध्यता नहीं है। भारतीय ग्राहकों के जो डाटा बाहर इन कंपनियों ने रखा हुआ है, उसको वह किसे ट्रांसफर करेंगे, इसको लेकर भी नियमों को उदार रखा गया है। सरकार ने इस कानून से जुड़े बार-बार पूछे जाने वाले सवालों (एफएक्यू) और उनके जवाबों की सूची जारी की है, जिसमें उक्त जानकारी दी गई है। इसमें यह भी बताया गया है कि कुछ मामलों में भारतीय ग्राहकों के बाहर संरक्षित किये गये डाटा को दूसरों को ट्रांसफर किये जाने पर प्रतिबंध है। किसी व्यक्ति की खास तौर पर संरक्षित डाटा को ट्रांसफर करने करने पर प्रतिबंध लगाने का फैसला एक समिति करेगी। सनद रहे कि भारत में पर्सनल डाटा को संरक्षित रखने को लेकर यह मुद्दा काफी लंबे समय से चल रहा है कि डिजिटल आधारित कंपनियों को भारत में होने वाले सारे पर्सनल डाटा को भारत में ही रखने के लिए बाध्य किया जाए। भारत सरकार की तरफ से इस मांग को आगे भी बढ़ाया गया था, लेकिन बहुराष्ट्रीय डिजिटल कंपनियों को यह रास नहीं आया और इस बात की सूचना है कि अमेरिका व कुछ दूसरे विकसित देशों ने भारत के साथ द्विपक्षीय बैठकों में इस मुद्दे को उठाया था। अब स्पष्ट है कि सरकार इस बारे में कठोर कदम नहीं उठाने जा रही है। बताया जा रहा है कि भारत के डिजिटल इको-सिस्टम को प्रतिस्पर्द्धी बनाए रखने के लिए सरकार में इसको लेकर आम राय बनी है। सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय की तरफ से जारी एफएक्यू में यह भी स्पष्ट किया गया है कि डिजिटल कंपनियों की छोटी मोटी गलतियों को लेकर भारी-भरकम अर्थदंड लगाने की भी कोई व्यवस्था नहीं की जा रही है।किसी कंपनी पर क्या जुर्माना लगाया जाता है, यह उसकी गलतियों की अवधि-प्रकार-गंभीरता, प्रकृति, दोबारा गलती नहीं हो इसके लिए उठाये गये कदमों आदि के आधार पर तय होगा। जो भी जुर्माना लगाया जाएगा वह उक्त गलती के अनुपात में व उपयुक्त होगा। इस अर्थदंड को हटाने के लिए भी कंपनियों को उपयुक्त बॉडी के समक्ष अपील करने का अधिकार होगा।

पीथमपुर में बवाल के बाद पुलिस का एक्शन लोगों को घरों में किया कैद, विरोध जारी

भोपाल, 06 जनवरी [एजेंसी]।

भोपाल गैस त्रासदी के 40 वर्ष बाद यूनियन कार्बाइड का कचरा नष्ट करने के विरोध में धार के पीथमपुर में बीते दो दिन हुए बवाल के बाद रविवार को पुलिस-प्रशासन सख्ती पर उतर आया। बवाल करने वाले कई अज्ञात पर प्राथमिकी के साथ ही संयंत्र से सटे गांव तारपुरा के लोगों को चिह्नित कर उन्हें घरों में कैद कर दिया है। गलियों और मोहल्लों में पुलिस बल तैनात है। स्थिति यह है कि लोग छतों तक पर नहीं जा पा रहे हैं। संयंत्र के 100 मीटर के दायरे में निषेधाज्ञा लागू कर दी गई है। हालांकि, प्रमुख बाजारों में शांति है, लेकिन वहां भी जगह-जगह पुलिस तैनात है। संभागायुक्त, कलेक्टर व पुलिस अधीक्षक हालात का जायजा ले रहे हैं।उधर, सोमवार को मध्य प्रदेश हाई कोर्ट की जबलपुर स्थित मुख्य पीठ में कचरे के निष्पादन पर राज्य सरकार को अब तक की अनुपालन आख्या प्रस्तुत करनी है। शासन स्तर पर इसकी तैयारी की गई है। अलबत्ता, विरोध के चलते अब तक

पीथमपुर में कचरे का निष्पादन न किए जाने का कारण भी सरकार हाई कोर्ट में बताएगी। वस्तुस्थिति से अवगत कराते हुए कोर्ट से अग्रिम आदेश का अनुरोध किया जाएगा, ऐसा शासन स्तर के अधिकारियों का कहना है।बता दें कि पीथमपुर के लोग रासायनिक कचरे से जनहानि की आशंका जाहिर करते हुए विरोध कर रहे हैं। हालांकि, राज्य सरकार की ओर से उन्हें लगातार आश्वस्त किया जा रहा है कि विशेषज्ञों की निगरानी में निस्तारण का निर्णय लिया गया है।

विशेषज्ञों ने संतुष्ट किया है कि कचरे को नष्ट करने से जलवायु को कोई नुकसान नहीं होगा।उधर, पीथमपुर के लोग कचरे को कहीं और नष्ट करने की मांग पर अड़े हुए हैं। नतीजा, भोपाल से 337 टन कचरा लेकर आए सभी 12 कंटेनर चार दिनों से पीथमपुर स्थित उस संयंत्र में ही खड़े हैं, जहां उसे नष्ट करने का निर्णय लिया गया है। कचरा संयंत्र में उतरने न पाए, इसके लिए शुक्रवार को आंदोलनकारियों ने पीथमपुर बंद रखा। उग्र प्रदर्शन किया, जाम लगाया, पथराव किया। दो भाजपा कार्यकर्ताओं ने आत्मदाह का प्रयास भी किया। शनिवार को भी आंदोलनकारियों ने संयंत्र पर पथराव किया।

26 म्यांमार नागरिकों को भेजा गया वापस, मणिपुर के सीएम बोले- अवैध प्रवासियों के खिलाफ होगी कार्रवाई

इंफाल। मणिपुर के सीएम एन बीरेन सिंह ने रविवार को बताया कि राज्य की सीमा के जरिए भारत में प्रवेश करने वाले 26 म्यांमार नागरिकों के एक समूह को रविवार को उनके देश वापस भेज दिया गया है। उन्होंने कहा कि उनकी सरकार अवैध आव्रजन के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए प्रतिबद्ध है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर उन्होंने एक पोस्ट में कहा कि राज्य सरकार युद्ध से भाग रहे लोगों को मानवीय सहायता प्रदान करने, उनकी देखभाल और

सम्मानजनक प्रस्थान सुनिश्चित करेंगे। मुख्यमंत्री ने कहा कि हालांकि, राज्य अवैध प्रवासियों को मणिपुर में रहने की अनुमति देने के खिलाफ़ कड़ा रुख अपनाता है। अधिकारियों ने कहा कि विदेशियों को राज्य पुलिस और केंद्रीय बलों के प्रतिनिधियों ने मोरेह सीमावर्ती शहर में म्यांमार के अधिकारियों को सौंप दिया है। भारत-म्यांमार सीमा स्थित मोरेह कस्बे में आग लगने से दो लोग मामूली रूप से घायल हो गए और 15 से अधिक घर जलकर खाक हो गए। आग तेगनोपाल जिले के मोरेह इलाके में लगी थी। असम राइफल्स और मणिपुर अग्निशमन सेवाओं ने तत्परता से काम किया और तेगनोपाल जिले के मिशन वेंग इलाके में 15-20 घरों में लगी भीषण आग को बुझा दिया। घटना में जख्मी हुए दो व्यक्तियों को प्राथमिक उपचार दिया गया। अधिकारियों ने बताया कि आग लगने के कारणों का पता लगाने के लिए जांच जारी है। भारतीय सेना ने मणिपुर पुलिस और अन्य सुरक्षा बलों के साथ मिलकर कई सफल संयुक्त अभियानों में मणिपुर के इंफाल पश्चिम, चंदेल, थौबल, कांगपोकपी और चूडचंदपुर जिलों के पहाड़ी और घाटी क्षेत्रों से 42 हथियार, गोला-बारूद और युद्ध सामग्री बरामद की है।

मकान के पिलर से निकल रहा तेल मौके पर पहुंचे अधिकारी, मच गया हड़कंप

कोलकाता, 06 जनवरी [एजेंसी]।

कोलकाता से सटे राजपुर- सोनारपुर नगरपालिका अंतर्गत फरताबाद मजूमदार पाड़ा में एक बुजुर्ग दंपती के तीन फ्लोर के मकान के एक खंभे से लगातार काले रंग के तरल पदार्थ (तेल) का रिसाव हो रहा है, जिसको लेकर रहस्य गहरा गया है। तेल कहां से और कैसे आ रहा है, यह रहस्य का विषय है। इस घटना के प्रकाश में आते ही उसे देखने के लिए काफी संख्या में लोग एकत्रित हो रहे हैं। तेल रिसाव की शिकायत पर राजपुर-सोनारपुर नगरपालिका के इंजीनियर भी पहुंचे और तस्वीर व वीडियोग्राफी कराके गए। अब नगरपालिका के अनुरोध पर जादवपुर विश्वविद्यालय (जेयू) के केमिकल इंजीनियरिंग विभाग की एक टीम मंगलवार को बुजुर्ग दंपती के घर जाकर मुआयना करेगी। जानकारी के अनुसार, नगरपालिका के वार्ड नंबर 29 में लगभग 50 वर्षों से रह रहे रतन कुमार सरकार (63) व शंपा सरकार (54) का फरताबाद में तीन मंजिला मकान है। दंपती का कहना है कि पिछले करीब एक वर्ष से घर के बाईं ओर के खंभे से तेल रिस रहा है। उनके अनुसार, करीब एक साल पहले उन्होंने मकान का पेंट करवाया था, उसके बाद से ही तेल का रिसाव हो रहा है। नगरपालिका के सीआईसी सदस्य नजरूल अली मंडल ने कहा कि पालिका की ओर से हमारे इंजीनियर ने आकर घर का मुआयना किया है। तेल का रिसाव कहां से और कैसे हो रहा है यह बहुत ही गंभीर विषय है। जादवपुर विवि की टीम इसका मुआयना कर जांच करेगी।वहीं, मकान से तेल रिसाव की घटना को लेकर आसपास के लोगों में आतंक का माहौल है। दंपती का कहना है कि तेल के लगातार रिसाव से फर्श फिसलन भरा और चिपचिपा हो गया है।

आप की धमकी का कांग्रेस ने उड़ाया मजाक, केजरीवाल को नहीं मिला ममता-अखिलेश का भी साथ

नईदिल्ली, 06 जनवरी [एजेंसी]।

दिल्ली विधानसभा चुनाव को लेकर कांग्रेस और आम आदमी पार्टी सरकार के बीच जारी तकरार लगातार तीखी होती जा रही है। आप प्रमुख अरविंद केजरीवाल के खिलाफ प्रदेश कांग्रेस के निरंतर तेज होते हमलों से साफ है कि विपक्षी आईएनडीआईए गठबंधन से उसे बाहर कराने की आप की धमकी का पार्टी सियासी माखौल उड़ाने में कोई कसर नहीं छोड़ रही। आप की धमकियों पर नरम पड़ने की बजाय कांग्रेस ने उस पर तीखे जवाबी हमले के लिए पार्टी ने पंजाब के अपने नेताओं को भी मैदान में उतार दिया है। पंजाब कांग्रेस के नेता दिल्ली के चुनावी रण में उतरकर अपने सूबे में आप सरकार के कड़वे अनुभव का दावा करते हुए राजधानी की जनता को झांसे में नहीं आने की सलाद दे रहे हैं। दिल्ली के चुनाव में कांग्रेस का यह रूख आप की सियासी चुनौतियों में इसलिए भी इजाफा कर रहा कि उसे अपने केंद्रीय नेतृत्व के मजबूत समर्थन के दम पर भाजपा चुनावी घेरेबंदी का हर दांव चल रही है। ऐसे में आप ने विपक्षी गठबंधन की राष्ट्रीय स्तर पर एकजुटता में बिखराव का भय दिखाकर कांग्रेस को दबाव में लाने के लिए आईएनडीआईए से बाहर कराने का अल्टीमेटम दिया था, मगर

अभी तक विपक्षी गठबंधन के किसी सहयोगी दल ने आप के इस अल्टीमेटम का न तो कोई नोटिस लिया है और न ही सार्वजनिक तौर पर उसे सहानुभूति जताई है। केजरीवाल से सहानुभूति रखने वाली तृणमूल कांग्रेस और समाजवादी पार्टी जैसे दलों की ओर से भी इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं आई है। विपक्षी खेमे घटक दलों के इस ठंडे रूख का ही परिणाम है कि 24 घंटे का कांग्रेस को अल्टीमेटम देने के करीब 10 दिन बाद भी आम आदमी पार्टी के नेता अब इसकी किसी तरह की चर्चा नहीं कर रहे हैं, जबकि इसके उलट कांग्रेस का अरविंद केजरीवाल पर हमला तेज होता जा रहा है।

आप ने कांग्रेस के जिस राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष अजय माकन, संदीप दीक्षित और देवेंद्र यादव के प्रहारों के बाद विपक्षी गठबंधन से बाहर कराने की धमकी दी थी, उन्होंने ही पंजाब कांग्रेस के अध्यक्ष अमरिंदर सिंह राजा वडिंग सहित पार्टी के तमाम वरिष्ठ नेताओं को दिल्ली बुलाकर आप पर शनिवार को गंभीर आरोप लगाए। इतना ही नहीं, माकन ने तो केजरीवाल पर राष्ट्र विरोधी होने जैसे आरोप भी लगाए हैं और अगले कुछ दिनों में आप के खिलाफ सबूत सहित हमले करने के इरादे भी सार्वजनिक तौर पर जाहिर कर दिए हैं।केजरीवाल के खिलाफ माकन रविवार को एक प्रेस कांफ्रेंस करने की घोषणा भी कर चुके थे, मगर रणनीति लिहाज से इसे किसी अन्य दिन के लिए टाल दिया। दिल्ली विधानसभा चुनाव में केजरीवाल के खिलाफ संदीप दीक्षित, वर्तमान मुख्यमंत्री आतिशी के मुकाबले महिला कांग्रेस की राष्ट्रीय अध्यक्ष अल्का लांबा और मनीष सिसोदिया के खिलाफ पूर्व मेयर फरहाद सूरी जैसे उम्मीदवारों को उतारकर कांग्रेस ने इस चुनाव में अपनी तरफ से आप को किसी तरह की सियासी गुंजाइश नहीं देने का साफ संदेश तो पहले ही दे दिया है।

गौरघाट जलप्रपात: कोरिया जिले का स्वर्गिक सौंदर्य

कोरिया जिला, अपनी हरी-भरी वादियों और अद्भुत प्राकृतिक दृश्यों के लिए प्रसिद्ध, एक ऐसा स्थान है जहाँ प्रकृति के विविध रंग हर कोने में बिखरे हुए हैं। इन्हीं अद्वितीय स्थानों में से एक है गौरघाट जलप्रपात, जो बैकुंठपुर मुख्यालय से लगभग 20-22 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यह स्थान न केवल जिलेवासियों, बल्कि दूर-दराज़ के पर्यटकों को भी अपनी ओर खींचता है।

गौरघाट: प्रकृति का सजीव चित्र

जंगलों और पहाड़ों के बीच स्थित गौरघाट

जलप्रपात, प्रकृति का एक अद्भुत चमत्कार है। यहाँ का बहता हुआ जल, कल-कल की आवाज़ और चारों ओर फैली हरियाली पर्यटकों के तन-मन को सुकून देती है। इस स्थान की लोकप्रियता का अंदाजा इस बात से लगाया जा सकता है कि नववर्ष, दीवाली, क्रिसमस, ईद, जन्मदिन, शादी की सालगिरह जैसे अनेक अवसरों पर बड़ी संख्या में लोग यहाँ आकर जश्न मनाते हैं।

सूर्यास्त का अलौकिक दृश्य

गौरघाट में ढलते सूरज की लालिमा जब झरने के पानी पर पड़ती है, तो दृश्य अद्भुत हो जाता है। यह पल न केवल मन को शांति देता है, बल्कि कैमरों में कैद होकर यादगार बन जाता है। युवा पर्यटक पुरंजय राजवाड़े बताते हैं, जब भी समय मिलता है, मैं अपने परिवार और दोस्तों के साथ यहाँ आता हूँ। प्रकृति के इतने करीब आकर महसूस होता है कि हम सृष्टि के कितने छोटे हिस्से हैं, और यह हमें इसे संरक्षित रखने की प्रेरणा देता है।

पर्यटन के साथ सुरक्षा

जिला प्रशासन और वन विभाग इस स्थान की देखरेख में तत्पर हैं। पर्यटकों को लगातार आगाह किया जाता है कि सेल्फी लेने के दौरान असावधानी न बरतें। यहाँ स्वच्छता बनाए रखने के लिए कचरा न फैलाने और प्लास्टिक का उपयोग न करने की अपील भी की जाती है।

गौरघाट में क्या करें?

परिवार और दोस्तों के साथ यहाँ का वातावरण पिकनिक के लिए आदर्श है, इसे महसूस करें। हरियाली, झरने की आवाज़ और पहाड़ों की सुंदरता आत्मा को शांति देती है, इसे करीब से देखे और तन-मन को सुकून दें। यह स्थान फोटोग्राफरों के लिए एक खजाना है। सूरज की रोशनी में झरने के बदलते रंगों को कैमरे में कैद करना एक अविस्मरणीय अनुभव है।

संरक्षण की जिम्मेदारी

गौरघाट सिर्फ एक पर्यटन स्थल नहीं, बल्कि प्रकृति का एक अनमोल उपहार है। इसे संरक्षित रखना हर पर्यटक की जिम्मेदारी है। यहाँ आकर जल, जंगल.और जमीन के महत्व को समझते हुए पर्यावरण संरक्षण का संदेश फैलाना हम सभी का कर्तव्य है।

आइए, गौरघाट को करीब से देखें

गौरघाट जलप्रपात न केवल एक पर्यटन स्थल है, बल्कि यह प्रकृति के करीब आने और उसके महत्व को मझने का एक माध्यम है। तो आइए, इस बार छुट्टियों में गौरघाट का रुख करें और इस अलौकिक सौंदर्य का आनंद उठाते हुए इसे संरक्षित रखने में अपनी भूमिका निभाएं। प्रकृति से प्यार करें, इसे बचाए रखें और इसके सौंदर्य का आनंद लें।

(एल.डी. मानिकपुरी, सहायक जनसंपर्क अधिकारी)

एशिया का प्रथम स्वचलित सायफन स्पिल-वे मुरूमसिल्ली बांध पर्यटन का केन्द्र

मुरूमसिल्ली जलाशय महानदी संकुल (काम्पलेक्स) का यह सबसे पुराना महत्वपूर्ण जलाशय हैं। मुरूमसिल्ली जलाशय महानदी की सहायक नदी सिलियारी नदी पर धमतरी जिला मुख्यालय से 28 किमी. दक्षिण में मुरूमसिल्ली गांव के पास बनाया गया हैं। इस जलाशय में अतिरिक्त जल निकास हेतु अपने आप चलने वाला विशेष एवं अद्वितीय स्पिलवे साइफन सिस्टम का निर्माण किया गया, जो कि उस समय की गहन अध्ययन एवं रूपांकन की सूझ-बूझ दर्शाता हैं। इस तरह का स्वचालित सायफन स्पिल-वे का निर्माण एशिया का प्रथम निर्माण था। अत: आटोमेटिक स्पिल-वे सायफन का निर्माण एक विशिष्टता लिये हुये है। जिसको सिविल इंजीनियरिंग की पुस्तक ''ऑटोमेटिक स्पिलवे सायफन ऑफ मुरूमसिल्ली डैम डिजाईन इन टेक्सट बुक इन सिविल इंजीनियरिंग (इरीगेशन इंजीनियरिंग सायफन वियर्स एंड लॉक्स राईटर बाय सर्ज लेलीयाव्स्की) में अध्ययन हेतु उल्लेखित किया गया है। इस तरह का यह स्पिल-वे भारत वर्ष में अद्वितीय है। सायफन स्पिल-वे का रूपांकन भी उस समय की गहन अध्ययन व सूझ-बूझ दर्शाता है। बांध के बन जाने के साथ विभिन्न सायफन चलाने की व्यवस्था की गयी है। सायफन स्वत: ही चलने लगते है। मुख्य सायफन के साथ-साथ बेवी सायफन लगे हुये है, जैसे-जैसे जल स्तर बांध में बढ़ता है, वृहदस्तर बेवी सायफन चलना प्रारंभ होते है। जल स्तर बढ़ने पर बेवी सायफन प्राइमिंग कर देते है व मुख्य सायफन चलने लगते है। सन् 1978-79 में महानदी परियोजना अंतर्गत रविशंकर जलाशय के निर्माण के बाद मुरूमसिल्ली जलाशय का पूरक जलाशय के रूप में प्रयोग किया जाने लगा।

गंगरेल बांध मोह लेती है पर्यटकों का मन

छत्तीसगढ़ राज्य के बड़े बांधों में से धमतरी जिले के गंगरेल में महानदी पर बने रविशंकर जलाशय गंगरेल बांध की खूबसूरती सभी को लुभाती है। इसी वजह से लाखों लोग यहां आते हैं। महानदी अत्यंत विशाल नदी है, जिसका उद्गम धमतरी जिले के सिहावा पर्वत से होता है और यह नदी अपने उद्गम के बाद उत्तर-पूर्व दिशा में प्रवाहित होती है। इस नदी पर बड़े-बड़े बांधों का निर्माण किया गया है, जिनमें से प्रमुख हैं रुद्री बांध, गंगरेल या रविशंकर बांध और उड़ीसा में निर्मित हीराकुंड बांध छत्तीसगढ़ का सबसे बड़ा बांध गंगरेल या रविशंकर बांध इसी नदी पर निर्मित है। यहां दर्शनीय स्थल मां अंगारमोती मंदिर के अलावा बोटिंग, मिनी गोवा, रंग-बिरंगे फूलों से सुसज्जित गार्डन पर्यटकों का मन अपनी ओर मोह लेती है। गंगरेल डैम पर खूबसूरत हट बने हुए हैं, जाहं से बांध के पास रहने और 24 घंटे उसे निहारने का आनंद भी उठाया जा सकता है। ग्राम छाती की डिगेश्वरी साहू बताती हैं कि वे अपने परिवार के साथ गंगरेल घूमने आती रहतीं हैं। यहां का शांत वातावरण, अंगारमोती का दर्शन कर उन्हें काफी अच्छा लगता है। इसके साथ ही बोटिंग, आकर्षक गार्डन और नदी को देख मन प्रफुल्लित होने लगता है। वहीं महासमुंद जिले से गंगरेल पहुंची कुमारी मोना साहू और उनके साथियों ने गंगरेल के मनोरम वातावरण, बोटिंग, विशाल नदी और अंगारमोती मां के मंदिर की काफी प्रशंसा की।

छत्तीसगढ़ की सबसे ऊंची चोटी गौरलाटा: प्राकृतिक सौंदर्य और रोमांच का अद्भुत सफर

बलरामपुर। छत्तीसगढ़ के बलरामपुर जिले के कुसमी विकासखंड में स्थित गौरलाटा चोटी राज्य की सबसे ऊंची चोटी के रूप में प्रसिद्ध है। समुद्र तल से 1,225 मीटर (4,022 फीट) की ऊंचाई पर स्थित यह चोटी प्राकृतिक सौंदर्य, जैव विविधता और रोमांचक ट्रैकिंग के शौकीनों के लिए एक आदर्श स्थल है। गौरलाटा चोटी न केवल एक प्राकृतिक धरोहर है, बल्कि यहां के अद्वितीय दृश्य और शांति पर्यटकों को आकर्षित करते हैं।

प्राकृतिक सुंदरता और विहंगम दृश्य

गौरलाटा चोटी से पूरे क्षेत्र का अद्भुत दृश्य देखने को मिलता है। हर ओर फैले घने जंगल, बहती नदियां, छोटे-छोटे गांव और दूर-दूर तक फैली पहाड़ियों की सुंदरता पर्यटकों को मंत्रमुग्ध कर देती है। विशेषकर सूर्योदय और सूर्यास्त के समय यहां का दृश्य अत्यंत आकर्षक होता है। सर्दियों में ठंडी हवाओं के बीच यहां का मौसम और भी मनमोहक हो जाता है, जो इसे एक अद्वितीय पर्यटन स्थल बना देता है।

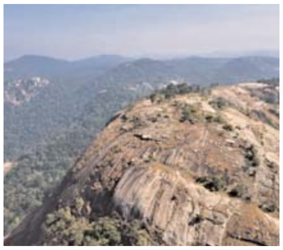

रोमांचक ट्रैकिंग अनुभव

गौरलाटा चोटी तक पहुंचने के लिए लगभग 8 से 10 किलोमीटर की ट्रैकिंग करनी होती है। कुसमी विकासखंड के ग्राम इदरीपाट से यह यात्रा शुरू होती है, और रास्ते में घने जंगल, चट्टानों और पथरीली पगडंडियों से गुजरते हुए चोटी तक पहुंचा जा सकता है। यहां का वातावरण ठंडी हवा और साफ मौसम से भरपूर होता है, जो ट्रेकिंग को और भी रोमांचक बना देता है। विशेष रूप से अक्टूबर से फरवरी तक ट्रेकिंग का समय सबसे आदर्श होता है।

सांस्कृतिक धरोहर और स्थानीय जीवन

गौरलाटा क्षेत्र न केवल प्राकृतिक दृष्टि से महत्वपूर्ण है, बल्कि यहां की सांस्कृतिक समृद्धि भी उल्लेखनीय है। स्थानीय आदिवासी समुदाय की पारंपरिक जीवनशैली, त्यौहार और लोकगीत इस क्षेत्र को सांस्कृतिक रूप से समृद्ध बनाते हैं। पर्यटकों को यहां न केवल प्रकृति का आनंद मिलता है, बल्कि वे स्थानीय आदिवासी संस्कृति और पारंपरिक व्यंजनों का भी अनुभव कर सकते हैं।

गौरलाटा कैसे पहुंचें?

गौरलाटा चोटी बलरामपुर जिला मुख्यालय से लगभग 60-65 किलोमीटर की दूरी पर स्थित है, और यह ट्रैकिंग के शौकीनों के लिए एक स्वर्ग की तरह है। गौरलाटा चोटी की यात्रा न केवल एक साहसिक अनुभव है, बल्कि यह प्रकृति प्रेमियों और सांस्कृतिक उत्साही पर्यटकों के लिए भी एक अद्वितीय स्थल बन चुकी है।

लखपति दीदियां लिख रहीं आर्थिक सशक्तिकरण की नई इबारत

कोरिया बैकुंठपुर। जब नारी उद्यमशील होती है, तो समाज आत्मनिर्भर बनता है। कोरिया जिले में इस विचार को वास्तविकता में बदलने का कार्य किया जा रहा है। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन (बिहान) के तहत शुरू की गई लखपति दीदी योजना ने ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाकर उन्हें एक नई पहचान दी है। यह योजना केवल आर्थिक सशक्तिकरण का साधन नहीं, बल्कि समाज में महिलाओं के महत्व को स्थापित करने का मार्ग भी है।

ग्रामीण महिलाओं की नई उड़ान

कोरिया जिले में दर्जनों महिलाएं अब निर्माण सामग्री आपूर्ति और ठेकेदारी के कार्यों में सक्रिय हैं। इन महिलाओं ने परंपरागत कार्यों की सीमाओं को पार कर निर्माण सामग्री जैसे सेंट्रिंग प्लेट और मिक्सर मशीन की आपूर्ति शुरू की है। इस पहल ने न केवल उनके जीवन में आर्थिक स्थिरता लाई है, बल्कि प्रधानमंत्री आवास योजना (ग्रामीण) के लक्ष्यों को तेजी से पूरा करने में भी सहायक सिद्ध हुई हैं। पिछले दो वर्षों में 25 से अधिक महिलाओं ने निर्माण क्षेत्र में ठेकेदारी को अपनाया। सोनहत के अकलासरई की प्रेमवती और शांति बाई, ग्राम ओरगई की तुलेश्वरी, कर्री की गीता, और बैकुंठपुर के सलबा की सरिता साहू जैसी महिलाएं अब गांवों में ठेकेदार दीदी के नाम से जानी जाती हैं। इन महिलाओं ने अपने गांवों में 900 से अधिक आवास निर्माण कार्य पूरा कर एक मिसाल पेश की है।

महिलाओं के सशक्तिकरण की प्रेरणा

जिला कलेक्टर श्रीमती चंदन त्रिपाठी का कहना है, महिलाओं का सशक्तीकरण किसी भी समाज की प्रगति की पहचान है। लखपति दीदी योजना से जुड़ी महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर होकर कोरिया को एक नई दिशा प्रदान कर रही हैं। मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत डॉ. आशुतोष चतुर्वेदी ने बताया कि बिहान के तहत महिलाओं को 1.5 लाख से 6 लाख रूपए तक का लोन उपलब्ध कराया जा रहा है। इसके साथ ही, मुद्रा योजना, सीआईएफ और एसवीईपी जैसी योजनाओं के माध्यम से भी महिलाओं को व्यवसाय से जोड़ने की प्रक्रिया जारी है।

ग्रामीण विकास का नया आधार

लखपति दीदियां न केवल अपने जीवन को बदल रही हैं, बल्कि गांवों की तस्वीर भी बदल रही हैं। उनके ठेकेदारी कार्यों ने प्रधानमंत्री आवास योजना के कार्यों में गति दी है और वंचित परिवारों को पक्के मकान का सपना पूरा करने में मदद की है।

सशक्त महिलाओं की कहानी

सोनहत के अकलासरई की प्रेमवती और शांति बाई ने मिक्सर मशीन और सेंट्रिंग प्लेट के उपयोग से ग्रामीण क्षेत्र में पहचान बनाई है। कर्री की गीता, कैलाशपुर की मनीषा, और महोरा की इंद्रमनी जैसी महिलाओं ने परंपरागत कार्यों से हटकर निर्माण कार्यों में हाथ आजमाया और आज ये महिलाएं लखपति दीदी श्रेणी में शामिल हो चुकी हैं।

सुनने व पढ़ने में अक्सर मिलता है कि जुनून और कठिन परिश्रम का कोई विकल्प नहीं होता। जिले की इन महिलाओं ने अपनी जीवटता से इस बात को चरितार्थ कर रही हैं। लखपति दीदी योजना ने उन्हें सिर्फ आर्थिक रूप से सशक्त नहीं किया, बल्कि समाज में उनकी भूमिका को भी पुनः परिभाषित किया है। कोरिया जिले का यह मॉडल न केवल ग्रामीण विकास की दिशा में एक कदम है, बल्कि यह प्रेरणा देता है कि जब महिलाएं आगे बढ़ती हैं, तो समाज का हर कोना रोशन होता है।

धान की अफरा-तफरी: खाद्य विभाग ने की बड़ी कार्रवाई

तीन लोगों के ऊपर एफआईआर दर्ज

कोरिया बैकुंठपुर। कलेक्टर श्रीमती चंदन त्रिपाठी के निर्देश पर खाद्य विभाग ने जिले में धान की अफरा-तफरी के मामले में बड़ी कार्रवाई की है। आवश्यक वस्तु अधिनियम, 1955 की धारा 3/7 के तहत तीन आरोपियों पर मामला दर्ज किया गया है। यह घटना 1 जनवरी 2025 की रात की है, जब चिरमी धान खरीदी केंद्र से कटघोरा स्थित राइस मिल के लिए भेजे गए 140 क्विंटल धान (350 बोरे) को बीच रास्ते पोड़ी बचरा के एक गोदाम में उतारकर ग़लत तरीके से छिपाने का प्रयास किया गया। तहसीलदार और पोड़ी बचरा पुलिस चौकी प्रभारी ने सूचना पर कार्रवाई करते हुए मौके पर धान लदे ट्रक (नंबर ष्ट्र15श्वश्व-1984) को रोका। जांच में पाया गया कि यह धान गंगा राम राजवाड़े के गोदाम में उतारा जा रहा था, जो नियमों का उल्लंघन है। खाद्य अधिकारी विष्णु नारायण शुक्ला और सहायक पंजीयक जयपाल एक्का ने मौके पर पहुंचकर ट्रक चालक और अन्य संदिग्धों से पूछताछ की। चालक बसंत राम ने स्वीकार किया कि धान कटघोरा राइस मिल के लिए था, लेकिन उसे जानबूझकर गोदाम में उतारा गया। प्रशांत अग्रवाल (निवासी कटघोरा), बसंत राम (निवासी चैनपुर, जिला सरगुजा) एवं गंगा राम राजवाड़े (निवासी पोड़ी बचरा) पर एफआईआर दर्ज की गई है। धान के 350 बोरे, जिनकी कीमत 4,32,880 रुपए आंकी गई है और ट्रक को पुलिस ने जप्त कर लिया है। खाद्य अधिकारी विष्णु नारायण शुक्ला ने कहा कि इस प्रकार की धान की अफरा-तफरी से राज्य की खाद्य सुरक्षा पर बुरा प्रभाव पड़ता है। विभाग दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई करेगा। फिलहाल पुलिस और खाद्य विभाग की संयुक्त टीम मामले की जांच कर रही है। यह पता लगाया जा रहा है कि इस साजिश में और कौन-कौन शामिल हैं।

पचास हजार रूपये कीमत के गांजा सहित 1 गिरफ्तार, थाना सूरजपुर पुलिस की कार्यवाही

सूरजपुर। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रशांत कुमार ठाकुर ने जिले के थाना-चौकी प्रभारियों को नशे के धंधे में लिप्त लोगों के विरूद्व सख्त कार्यवाही करते एवं क्षेत्र में सक्रिय मुखबीर का जाल फैलाने के निर्देश दिए थे जिसके बाद से ही जिले की पुलिस नशीली पदार्थ के गोरख धंधे पर सतत् निगाह बनाए हुए है और लगातार कार्यवाही करने में लगी हुई है। इसी तारतम्य में दिनांक 05.01.2025 को थाना सूरजपुर पुलिस को मुखबीर से सूचना प्राप्त हुई कि ग्राम उमेशपुर के साप्ताहिक बाजार के पास एक व्यक्ति स्कूटी में सवार है और गांजा बिक्री करने के लिए ग्राहक की तलाश कर रहा है। थाना सूरजपुर पुलिस ने सूचना की तस्दीक व कार्यवाही हेतु ग्राम उमेशपुर साप्ताहिक बाजार के पास घेराबंदी कर स्कूटी सहित गयासुद्दीन अंसारी पिता अब्दुल मजीद उम्र 52 वर्ष ग्राम करौंदामुड़ा, थाना झिलमिली को पकड़ा जिसके कब्जे से 2 किलो 477 ग्राम गांजा पाया गया जिसकी बाजारू कीमत करीब 50 हजार रूपये है। मामले में गांजा व परिवहन में स्कूटी आरोपी के विरूद्व धारा 20बी एनडीपीएस एक्ट के तहत कार्यवाही कर गिरफ्तार किया है। इस कार्यवाही में थाना प्रभारी सूरजपुर विमलेश दुबे, एएसआई नंदलाल सिंह, आरक्षक रविराज पाण्डेय, गणेश सिंह व सबेश्वर पैंकरा सक्रिय रहे।

खड़गवां पुलिस ने 7 हजार कीमत का कोयला किया जप्त, अपराध दर्ज

सूरजपुर। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक श्री प्रशांत कुमार ठाकुर ने अवैध कारोबार पर शत-प्रतिशत अंकुश लगाने के सख्त निर्देश थाना-चौकी प्रभारियों को दिए है। इसी क्रम में 04.01.2025 को चौकी खड़गवां पुलिस को मुखबीर से सूचना मिली कि जगन्नाथपुर महान-3 के खदान से चोरी की गई कोयला को वहीं लावारिश हालत में डम्प किया गया है। सूचना पर पुलिस टीम मौके पर पहुंची जहां करीब 12 क्विंटल अवैध कोयला कीमत करीब 7200 रूपये का डम्प होना पाया जिसे जप्त कर धारा 106 बीएनएसएस के तहत जप्त कर आगे की कार्यवाही की जा रही है। इस कार्यवाही में चौकी प्रभारी योगेन्द्र जायसवाल व उनकी टीम सक्रिय रही।

अलग-अलग क्षेत्र से दो दोपहिया वाहन पार

रायपुर। खमतराई और तेलीबांधा थाना क्षेत्र से अज्ञात चोर ने दो दोपहिया वाहन पार कर दिया। दोनों ही मामलों में पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ अपराध दर्ज किया है।

मिली जानकारी के अनुसार धनलक्ष्मी नगर भनपुरी निवासी प्रार्थी टी.उदय कुमार 30 वर्ष ने खमतराई थाना में शिकायत किया कि वह अपनी बाइक क्रमांक सीजी 04 एनजेड 0898 को अपने घर के बाहर खड़ी किया था, तभी अज्ञात चोर ने पार कर दिया। चोरी गए बाइक की कीमत करीब 20 हजार रुपए के आसपास बताई जा रही है। वहीं दूसरे मामले में गीतांजली नगर खम्हारडीह निवासी रामविलाश महानंद 37 वर्ष ने तेलीबांधा थाना में शिकायत किया वह अपनी एक्टिवा क्रमांक सीजी 04 पीयू 2823 को जलविहार कालोनी के पास खड़ी किया था, तभी अज्ञात चोर ने पार कर दिया। चोरी गए एक्टिवा की कीमत करीब 40 हजार रुपए के आसपास बताई जा रही है। मामले में पुलिस ने अज्ञात चोरों के खिलाफ अपराध दर्ज कर जांच में लिया है।

शादी का झांसा देकर महिला से दुष्कर्म

रायपुर। ग्राम काठाडीह में शादी का झांसा देकर महिला से दुष्कर्म करने का मामला प्रकाश में आया है। प्रार्थिया की शिकायत पर मुजगहन पुलिस ने आरोपी के खिलाफ अपराध दर्ज किया है। पदमनाभपुर दुर्ग निवासी 30 वर्षीय प्रार्थिया ने मुजगहन थाना में शिकायत किया कि आरोपी विनय कुमार जायसवाल 30 वर्ष से उसका परिचय सोशल मीडिया के माध्यम से हुआ था। जिससे आरोपी ने प्रार्थिया को काठाडीह अपने घर बुलाकर शादी करने का झांसा देकर दुष्कर्म किया और फिर शादी से इंकार कर दिया। प्रार्थिया की शिकायत पर मुजगहन पुलिस ने आरोपी को हिरासत में लेकर पूछताछ कर रही है।

केबल वायर पार

रायपुर। ग्राम मंगशा शमशान घाट के पास अज्ञात चोर ने खंबा को क्षतिग्रस्त कर लाखों रुपए का केबल वायर पार कर दिया। प्रार्थी की शिकायत पर धरसींवा पुलिस ने अज्ञात चोर के खिलाफ अपराध दर्ज किया है। प्रार्थी धीरेन्द्र कुमार साहू विद्युत वितरण केंद्र सिलयारी में कार्यरत है। प्रार्थी ने थाना में शिकायत किया कि ग्राम मंगशा स्थित शमशान घाट के पास लगे खंबे को अज्ञात चोर ने क्षतिग्रस्त कर एसी एआर कंडेटर 2010 मीटर और 320 मीटर एसी केबल वायर पार कर दिया।

शराब पीकर वाहन चलाने वालों पर है सूरजपुर पुलिस की कड़ी नजर

सूरजपुर। शराब पीकर वाहन चलाते मिलने पर चालान के साथ-साथ गाड़ी भी जब्त की जा रही है। सड़क हादसों को रोकने के लिए एसएसपी सूरजपुर श्री प्रशांत कुमार ठाकुर ने यातायात नियमों के उल्लघंन सहित शराब पीकर वाहन चलाने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई करने के निर्देश दिए है। पुलिस के द्वारा वाहन चेक प्वाईंट लगाकर सभी दो पहिया, चार पहिया और भारी वाहनों के ड्राइवरों की जांच की गयी। मुख्य सड़क से

गुजरने वाले सभी वाहनों के ड्राइवरों की ब्रीथ एनालाइजर मशीन से जांच की। थाना सूरजपुर, विश्रामपुर, जयनगर व प्रतापपुर, चौकी खड़गवां व यातायात पुलिस की चेकिंग में 9 चालक शराब के नशे में पाए गए जिनकी गाड़ी जप्त कर थाना में खड़ा करा दी गई है। थाना-चौकी की पुलिस प्रत्येक दिवस वाहन चेकिंग प्वाईट पर मुस्तैदी व सतर्कतापूर्वक वाहन की चेकिंग में लगी हुई है। दिनांक 4 व 5 जनवरी 2025 को जिले की पुलिस ने वाहन चेकिंग के दौरान 09 लोगों को शराब पीकर वाहन चलाते पकड़ा जिनकी गाड़ी जप्त किया गया है वहीं बिना हेलमेट के 183, बिना सीट बेल्ट के 117, नियम तोड़ने के 144, तेज गति से वाहन चलाने 02, माल वाहक पर यात्री परिवहन के 03, नो पार्किंग के 12, बिना नंबर के 05 व अन्य यातायात नियमों के उल्लघंन पर 346 कुल 826 लोगों के विरूद्ध एमव्ही एक्ट की कार्यवाही कर 3 लाख 17 हजार 2 सौ रूपये समन शुल्क अर्जित किया गया है। चेकिंग के दौरान पुलिस अधिकारियों ने लोगों को यातायात नियमों का पालन करने की हिदायत दी और कहा कि शराब पीकर गाड़ी चलाने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी। यह अभियान सड़क सुरक्षा सुनिश्चित करने और सड़कों पर चालकों के गैर-जिम्मेदाराना व्यवहार को रोकने के लिए चलाया जा रहा है। उन्होंने लोगों से अपील की कि वे यातायात नियमों (ट्रैफिक रूल्स) का पालन करें।

यातायात नियमों के पालन से बचा सकते हैं जिदगियां, सूरजपुर पुलिस ने स्कूल के छात्रों को ट्रैफिक नियमों से कराया अवगत

सूरजपुर। वरिष्ठ पुलिस अधीक्षक प्रशांत कुमार ठाकुर के निर्देश पर जिले की पुलिस यातायात नियमों के प्रति स्कूली छात्रों, नागरिकों को जागरूक करने के लिए अभियान चला रही है। सड़क हादसों में कमी लाने, यातायात नियमों का पालन कराने तथा साइबर अपराध से बचाव को लेकर जागरूकता के लिए शनिवार, 04 जनवरी को थाना ओड़गी पुलिस के द्वारा स्वामी आत्मानंद स्कूल में यातायात जागरूकता, साइबर अपराध एवं उससे बचाव की जानकारी से 500 स्कूली छात्रों को अवगत कराया।

थाना प्रभारी ओड़गी मनी प्रसाद राजवाड़े के द्वारा छात्रों को बताया कि यदि वाहन को नियंत्रित गति से चलाएं और यातायात नियमों का पूरी मजबूती के साथ पालन करें, तो सड़क हादसों पर काफी हद तक अंकुश पाया जा सकता है। युवाओं की जिम्मेदारी है कि मार्ग हादसों पर रोक लगाने के लिए न सिर्फ स्वयं जागरूक हों, बल्कि दूसरों को भी जागरूक करें। वाहन चलाते समय तनिक सी लापरवाही सड़क हादसे को न्यौता देता है। उन्होंने अपील करते हुए कहा कि सभी यातायात नियमों का पालन करें। दोपहिया वाहन चलाने वाले व्यक्ति हेलमेट लगाएं और कार चलाते समय सीट बेल्ट लगाए। यातायात नियमों के पालन से दुर्घटना की संभावना लगभग न के बराबर होती है। यातायात के नियमों के पालन से वाहन चालक खुद के साथ दूसरों की भी जिदगियां बचा सकते हैं। सुरक्षा के लिहाज से यातायात के नियमों का पालन करना बेहद जरूरी है। यातायात आरक्षक सुशील मिश्रा के द्वारा सड़क सुरक्षा से जुड़े संकेतों का डेमो के माध्यम से जानकारी दिया। थाना प्रभारी ने छात्रों को साइबर अपराध एवं सुरक्षा व सावधानी को लेकर जानकारी देते हुए कहा कि वर्तमान युग में एंड्रॉयड मोबाइल के माध्यम से साइबर अपराधों में बढ़ोत्तरी हुई हैं, लेकिन जागरूक नागरिक इन अपराधों से बच सकता है। वह अपनी जानकारियों को किसी अंजान व्यक्ति से साझा नहीं करे। आपको किसी अन्य व्यक्ति के फोन आने पर वह डरा धमकाकर अथवा लॉटरी लगने के नाम पर आपसे जानकारी लेता है, तो आप बिल्कुल उसे कोई जानकारी ना दें। इसकी शिकायत पुलिस में करें। किसी भी तरह के लोभ-लालच या प्रलोभन के मैसेज को पूरी तरह नजर अंदाज करें। वर्तमान में घटित हो रहे सायबर अपराध से छात्रों को अवगत कराया। इस मौके पर छात्राओं ने भी संवाद किया और सायबर अपराध को लेकर सवाल जवाब किए। इस दौरान स्कूल के प्राचार्य, पुलिस के अधिकारीगण व स्कूली छात्र-छात्राएं मौजूद रहे।

लेबर सप्लाई के नाम पर ठगी

रायपुर। लेबर सप्लाई करने के नाम पर 46 लाख की अधिक की ठगी करने का मामला प्रकाश में आया है। प्रार्थी की शिकायत पर गंज थाना पुलिस ने आरोपी के खिलाफ धोखाधड़ी का अपराध दर्ज किया है।

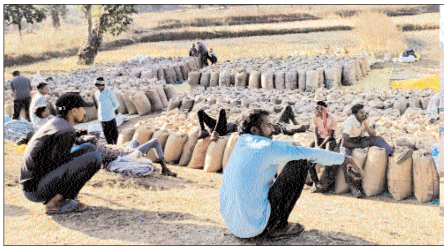

कमर्जी धान खरीदी केन्द्र में किसानों का शोषण, प्रबंधक ले रहा प्रति बोरी आधा किलो अतिरिक्त धान

जनकपुर। सरकार भले ही किसानों को उनकी उपज का उचित दाम दिलाकर आर्थिक रूप से मजबूत करने के उद्देश्य से उनकी उपज खरीदने के लिए योजना लागू किया हो, और किसानों को सुविधायें उपलब्ध कराने के लिए खरीदी केंद्र स्थापित कर सहकारी समितियां बनाए गए हों, लेकिन जिन सहकारी समितियों के माध्यम से सरकार यह व्यवस्था संचालित कर रही है, वही सहकारी समितियाँ और उनके कर्मचारियों द्वारा खुलेआम किसानों का शोषण करने से गुरेज नहीं कर रहे हैं। ऐसा ही मामला एमसीबी जिले के भरतपुर ब्लाक अंतर्गत कमर्जी धान खरीदी केन्द्र का सामने आया है।

यहाँ अपनी उपज को लेकर आने वाले किसानों का प्रबंधक खुलेआम शोषण कर रहा है। कमर्जी धान खरीदी केंद्र का प्रभारी प्रबंधक संजय कुमार साहू मनमानी करते हुए किसानों से प्रति बोरी आधा किलो अतिरिक्त धान ले रहा है। प्रभारी प्रबंधक और इनके मातहत कर्मचारियों द्वारा शासन के निर्देशों की धज्जियाँ उड़ाते हुए किसानों पर दबाव बनाकर 40 किलो 700 ग्राम धान लेने के स्थान पर खुलेआम 41 किलो 200 ग्राम धान लिया जा रहा है। किसानों द्वारा प्रति बोरी आधा किलो ज्यादा धान लेने का बिरोध करने पर प्रभारी प्रबंधक बहाना बनाकर उनका धान लेने से इंकार कर वापस कर देने की धमकी देता है, जिससे मज़बूरीवश किसान अपनी खून पसीने से तैयार की गई धान की उपज में डंडी मरवा रहें है। कमर्जी धान खरीदी केंद्र में बिक्री के लिए अपनी उपज को लेकर आने वाले किसान रामशरण पिता मोतीलाल ग्राम नौगई, हिरदन सिंह पिता तिलकधारी सिंह ग्राम मोगरा, अगरसाय पिता दलवीर ग्राम गोपद नगर ने बताया कि यहाँ का प्रभारी प्रबंधक संजय कुमार साहू और इसके कर्मचारियों द्वारा हम किसानों पर दबाव बनाकर प्रति बोरी में आधा किलो अतिरिक्त धान किन नियमों के तहत और किसके आदेश पर लिया जा रहा है।

इस बारे में कोई बताने को तैयार नहीं है। यहाँ के किसानों की स्थिति यह है कि उन्होंने जितने भी जिम्मेदार अधिकारी हैं उनसे अपनी परेशानी बताई लेकिन व्यवस्था जस की तस बनी हुई है। कमर्जी धान खरीदी केंद्र में लगभग आधे किसानों की धान खरीदी हो चुकी है लेकिन समिति में इसी तरह की अंधेरगर्दी जारी है। यहाँ के प्रभारी प्रबंधक द्वारा किसानों के साथ किया जा रहा शोषण एवं अनियमितता को न तो किसी जनप्रतिनिधि ने और न ही किसी जिम्मेदार अधिकारी द्वारा ही अभी तक दूर करने का प्रयास किया गया है।

आदर्श विहार से डीडीएम रोड तक पहुंचा खोजी कुत्ता

सराफा कारोबारी की हत्या से दहशत, आईजी ने लिया जायजा

कोरबा। वर्ष 2025 की शुरुआत होने के साथ कोरबा शहरी क्षेत्र में गंभीर किस्म की घटनाओं का ग्राफ बढ़ने से पुलिस का सिरदर्द बढ़ा है वहीं लोग तनाव में हैं। बस स्टैंड के नजदीक आदर्श विहार आवासीय परिसर में पिछली रात एक सराफा कारोबारी की चाकू मारकर हत्या कर दी गई। वहीं बाहर खड़ी कार को लूटकर आरोपी फरार हो गए। घटना की खबर मिलने पर पुलिस हरकत में आई। डॉग स्क्वायड ने भी यहां का जायजा लिया। बिलासपुर रेंज के पुलिस महानिरीक्षक डॉ. संजीव शुक्ला ने इस मामले को लेकर स्थानीय अधिकारियों और नागरिकों से चर्चा की। जांच-पड़ताल के लिए कई टीमें बनाई गई है।

एस.एस. प्लाजा में अमृता ज्वेलर्स का संचालन कर रहे गोपाल राय सोनी की रात्रि में लगभग 10 बजे उनके निवास पर घुसकर अराजक तत्वों ने हत्या कर दी। उनके शरीर पर चाकू से कई हमले किए गए। घर में गोपाल की बीमार पत्नी बिस्तर पर मौजूद थीं। आरोपियों की संख्या दो बताई गई जिन्होंने न केवल इस घटना को अंजाम दिया बल्कि होटल ब्लू डायमंड के सामने मौजूद सोनी की क्रेटा कार को लूटकर फरार हो गए। इस घटना ने कई तरह के सवालों को जन्म दिया है और पुलिस की कार्यप्रणाली पर भी प्रश्नचिन्ह लगाए हैं।

आदर्श विहार में घटना स्थल का जायजा लेते पुलिस अधिकारी और इनसेट में मृतक गोपाल राय सोनी।

इस घटना को लेकर जल्द ही आसपास में खबर फैल गई। शहर के पॉश इलाके में आदर्श विहार की गिनती होती है। जिस समय यह घटना हुई, इलाके में लोगों की आवाजाही औसत के आसपास थी। इस पर भी बिना किसी भय के आरोपी यहां पहुंचे और इस हैरतअंगेज घटना को अंजाम देकर चलते बने। डॉग स्क्वायड की मदद इस मामले की प्रारंभिक जांच-पड़ताल के लिए ली गई। पता चला कि आरोपी घटना स्थल से आदर्श विहार के भीतर से होते हुए डीडीएम स्कूल मुख्य मार्ग में बजरंगबली मंदिर की ओर पहुंचे और वहां से भाग खड़े हुए। इस आधार पर उनकी लोकेशन के बारे में जानकारी जुटाई जा रही है।

औद्योगिक नगर कोरबा के मुख्य क्षेत्र में हत्या और लूट की घटना ने कोरबा की पुलिस को सक्ते में ला दिया है। मामला चूंकि सराफा कारोबारी से जुड़ा हुआ था और व्यस्त क्षेत्र में घटना होने से स्थितियां बिगड़ सकती थी इसलिए उच्चाधिकारियों को इस बारे में फौरी तौर पर अवगत कराया गया। खबर होने पर बिलासपुर आईजी संजीव शुक्ला सुबह ही घटनास्थल पर पहुंच गए। उन्होंने अधिकारियों के साथ मौका मुआयना किया मृतक गोपाल राय सोनी के परिजनों से आवश्यक जानकारी हासिल की। आईजी संजीव शुक्ला ने बताया की पुलिस प्रशासन ने इस मामले को अत्यंत गंभीरता से लिया है और अपराधियों तक पहुंचने के लिए आवश्यक जांच और पूछताछ चल रही है।

कारोबारी की हत्या, दो दिन बंद रहेंगी सराफा दुकानें

सर्राफा कारोबारी गोपाल राय सोनी की हत्या से उनके हम पेशेवर अत्यंत क्रोधित हैं। इस दूर दांत घटना के प्रतिक्रिया स्वरूप सर्राफा व्यवसाय दो दिन तक बंद रखने का निर्णय लिया गया। पुलिस की नाकामयाबी से संबंधित ज्ञापन मुख्यमंत्री और गृह मंत्री को प्रेषित किया गया।

सर्राफा कारोबारी गोपाल राय सोनी की हत्या से कोरबा का व्यावसाई वर्ग काफी आक्रोशित है। सर्राफा कारोबारियो ने इस मामले को लेकर आक्रोश व्यक्त करने के अलावा दो दिन तक अपना कारोबार बंद रखने का निर्णय लिया है। सर्राफा एसोसिएशन के अध्यक्ष जगदीश सोनी ने बताया कि हम सब खुद को असुरक्षित महसूस कर रहे हैं इसलिए मांग है कि गोपाल सोनी के अज्ञात हत्यारे का शीघ्राति शीघ्र पर्दाफाश किया जाए और इस तरह की घटना की पुनरावृत्ति ना हो इसके लिए पुलिस प्रशासन को चेतावनी दी जाए।

स्कूल के जीर्णोद्धार करने की मांग

कोरबा। एसईसीएल मानिकपुर प्रबंधन और जेसीसी सदस्यों के मध्य हुई वार्ता में मानिकपुर स्कूल की जीर्णोद्धार करने की मांग को भी उठाया गया। जेसीसी सदस्य छतराम मिरी, भागवत सिंह, उज्जवल बनर्जी, संजय सिंह सहित अन्य सदस्यों ने कहा कि मानिकपुर स्कूल में कालोनी के छात्र पढ़ते हैं। स्कूल की दशा अत्यंत खराब हो गई है। कुछ स्थानों पर मरम्मत किए जाने की जरूरत है। इसके लिए प्रबंधन ने कहा है कि आने वाले दिनों में इस मामले में गंभीरता के साथ विचार विमर्श किया जाएगा। इसी तरह डीए और टीए मामले को भी उठाया गया।

पताढ़ीधाम में मेले की तैयारी

कोरबा। सतनाम समिति के द्वारा पताढ़ीधाम में मेले की तैयारी की जा रही है। समिति की बैठक में निर्णय लिया गया है कि आने वाले दिनों में 100 गवां क्षेत्र के ग्रामीणों को मेले में भागीदारी करने के लिए कहा जाएगा। प्रत्येक वर्ष ग्रामीण क्षेत्रों से 100 गवां क्षेत्रों के लोग आते हैं। मेले की तैयारी के लिए आने वाले दिनों में भी और बैठक होगी। जिसके लिए आसपास के ग्रामीणों को भी बुलाया गया है। कमलेश अनंत ने जानकारी देते हुए बताया कि फरवरी माह में होने वाले इस मेले की भव्यता इसी बात से लगाई जा सकती है कि पूरे प्रदेश से नागरिक इस मेले में शामिल होने के लिए आते हैं। अध्यक्ष लखन लहरे, गैसराम मिरी तैयारी कर रहे हैं।

किसका भाग्योदय होगा निकायों से, टिकी है निगाह

प्रमुख पदों के लिए आरक्षण कल

कोरबा। प्रदेश की भाजपा सरकार ने तय किया है कि इस बार नगरीय निकायों के चुनाव प्रत्यक्ष प्रणाली से होंगें। पार्षद सहित महापौर और निकाय अध्यक्ष का चुनाव जनत खुद करेगी। पार्षदों के लिए वार्ड आरक्षण की प्रक्रिया पहले हो चुकी है। प्रमुख पदों के लिए आरक्षण 7 जनवरी को होगा। संभावित दावेदारों की निगाह इसी पर टिकी है।

आरक्षण का काम पूरा होने के साथ निकाय चुनाव को लेकर तैयारी का असली दौर शुरू होगा। कोरबा जिले में महापौर सहित अध्यक्षों का पिछला चुनाव अप्रत्यक्ष प्रणाली से हुआ था जिसमें महज कुछ पार्षदों को अपने पाले में सेट करने के साथ महापौर व अध्यक्ष निर्वाचित हो गए थे। उन्होंने बड़े मजे से पांच साल गुजारे। नफा-नुकसान को ध्यान में रखते हुए वर्तमान सरकार ने नियम बदल दिया है। उसने पिछले 15 वर्ष की व्यवस्था को बहाल करते हुए एक बार फिर प्रमुख पदों के चुनाव जनता के जरिए कराना सुनिश्चित किया है। कोरबा जिले में एक नगर निगम तीन नगर पालिका और दो नगर पंचायत हैं जहां पर आगामी समय में चुनाव होने हैं। भाजपा से संबंधित कार्यकर्ताओं और संभावित दावेदारों को ऐसा लगता है कि राज्य में सत्ता होने का लाभ मिल सकता है क्योंकि जनता मनोवैज्ञानिक रूप से सत्ता के साथ होती है। उसे मालूम होता है कि निकायों में एक जैसी विचारधारा की सरकार होने से राज्य स्तर पर उसे अपेक्षित सहयोग मिल सकता है। इसलिए स्वाभाविक रूप से हर कहीं सत्ताधारी दल के दावेदारों की संख्या ज्यादा है। निगम में पिछले चुनाव में महापौर का पद ओबीसी मुक्त रखा गया जिससे कांग्रेस के राजकिशोर निर्वाचित हो गए, हालांकि उनका पांच साल का कार्यकाल जाति प्रमाण पत्र और दूसरे कारण से विवादित रहा। इस बार जिले में एक नगर पालिका बांकीमोंगरा बनी है, उसे जीतना भाजपा के लिए प्राथमिकता है।

सुदूर अंचल में हरियर धरती ने उपयोगी कपड़े देकर खुश किया लोगों को

कोरबा। आत्मिक संतुष्टि के लिए कई प्रकार के प्रयोग हो सकते हैं जो दूसरों की जरूरत की पूर्ति का माध्यम बन सकते हैं। रेलवे अधिकारियों और कर्मियों की संस्था हरियर धरती ने एक बार फिर ऐसा काम किया और ग्रामीणों को खुशी दी।

हरियर धरती के द्वारा कोरबा के सुदूर करतला क्षेत्र के कोई एवं पसरखेत गांव में पहुंचकर जरूरतमंद लोंगो को ठंड के लिहाज से सैकड़ों कम्बल और नये-पुराने कपड़े वितरित किए गए। ठंड से जुड़ी समस्या को दूर करने में इनकी भूमिका साबित होगी। लाभान्वितों ने इस प्रयास की सराहना की। समिति के सदस्य ने बताया कि हर साल जरूरतमंदों को वह ग्रामीण क्षेत्र में कपड़ा बांटते हैं। संस्था की ओर से इसके अलावा कई विभिन्न सामाजिक कार्यक्रम भी आयोजित किए जाते हैं जो लोगों के हित में हो। पूर्व एआरएम अवधेश त्रिवेदी के समय हरियर धरती की स्थापना अच्छे उद्देश्य को लेकर की गई थी। सामाजिक सरोकार को इसमें सबसे उपर रखा गया। सीएसएम आनंद गुप्ता ने बताया कि तब से अब तक लगातार अंत्योदय वर्ग को ध्यान में रख हम ऐसे काम कर रहे हैं जिसमें संस्था के सदस्य सक्रिय हैं।

संगठन में कोई गुटबाजी नहीं : मनोज शर्मा

कोरबा। जिला भाजपा के नवनियुक्त अध्यक्ष मनोज शर्मा ने साफ तौर पर कहा है कि संगठन में किसी प्रकार की कोई गुटबाजी नहीं है और न ही मनमुटाव। अगर किसी को ऐसा लग रहा होगा तो आने वाले दिनों में इस प्रकार की धारणाएं मिथ्या साबित होगी।

अपने मनोनयन की घोषणा के बाद वे दीनदयाल कुंज पार्टी कार्यालय में मीडिया से बातचीत कर रहे थे। उन्होंने कहा कि किसी वजह से कार्यकर्ताओं में मतभेद हो सकते हैं जिन्हें दूर कर लिया जाएगा। पूर्व में नपा अध्यक्ष अध्यक्ष और किसान मोर्चा अध्यक्ष रह चुके शर्मा ने कहा कि निकाय और पंचायत चुनाव में भाजपा समर्थितों की जीत प्राथमिकता होगी। उन्होंने कहा कि हमारा ध्यान इस बात पर होगा कि विधानसभा क्षेत्रों में जहां कहीं हमारा संगठन कमजोर है, उसके पीछे के कारणों की खोज करने के साथ जरूरी काम किया जाए। निकाय क्षेत्रों में भी हम खुद को मजबूत करेंगे। हमें भरोसा है कि भारत सरकार और राज्य सरकार की विभिन्न कल्याणकारी योजनाओं की वजह से निकाय और पंचायत चुनाव में निश्चित रूप से जनता हमारे साथ खड़ी होगी।

भाजपा जिलाध्यक्ष का दीपका में स्वागत

कोरबा। भाजपा के नवनियुक्त जिलाध्यक्ष मनोज शर्मा का दीपका पहुंचने पर उनका कार्यकर्ताओं द्वारा जोरदार स्वागत किया गया। इस दौरान सूर्यप्रकाश शर्मा, राजू प्रजापति, अरूणीश तिवारी सहित अन्य कार्यकर्ताओं ने जोरदार स्वागत किया। आज बांकी नगर मंडल के अध्यक्ष उदय शर्मा के नेतृत्व में कार्यकर्ताओं ने जाकर दीपका में मनोज शर्मा को स्वागत किया। जबकि कल ही कोसाबाड़ी नगर मंडल के राजेश राठौर व सर्वमंगला नगर मंडल के मनीष मिश्रा के नेतृत्व में कार्यकर्ता भाजपा कार्यालय पहुंचकर मनोज शर्मा का स्वागत किया। शाम को भिलाई बाजार मंडल के अध्यक्ष दिनेश राठौर के नेतृत्व में मनोज शर्मा का स्वागत होगा।

कल से मौसम लेगा अंगड़ाई, भारी पड़ सकती है उपेक्षा

कोरबा। पौष का महीना कई कारणों से चुनौतिपूर्ण होता है और इस दौर में हर किसी को संभलने की आवश्यकता होती है। खासतौर पर बच्चों और उम्रदराजों के मामले में सतर्कता का व्यवहार अपेक्षित होता है। इस दौर में थोड़ी सी भी उपेक्षा का मतलब बड़ी समस्या को आमंत्रित करना है। मौसम विभाग ने 07 जनवरी से कड़ाके की ठंड की संभावना जतायी है। इसलिए भी लोगों को सावधान रहना होगा।

कुछ दिनों से महसूस किया जा रहा है कि रात्रि में तापमान का पारा गिर रहा है लेकिन सुबह 10 बजे के बाद ठंडी हवाओं के बीच गर्माहट का असर हो रहा है। फिर भी इसे इस रूप में नहीं लिया जा सकता है कि ठंडी की विदाई हो रही है सबकुछ सामान्य हो रहा है। मौसम विभाग ने चेताया है कि 07 जनवरी से छत्तीसगढ़ और मध्यप्रदेश के बड़े हिस्से में शीतलहर संभावित है। ऐसे में कड़ाके की ठंड पड़ेगी और यह पूरे वातावरण को बदलेगी। ऐसे में कई प्रकार की समस्याएं हो सकती है।

लोगों को अलर्ट किया जा रहा है कि वे मौसम के लगातार बदलते रूख को असामान्य ना समझे और इसे गंभीरता से लें। स्वास्थ्य क्षेत्र से जुड़ा वर्ग का कहना है कि पौष के महीने में मौसम जब अंगड़ाई लेता है तो यह आपके शरीश को प्रभावित करता है। श्वसनतंत्र के साथ ह्दय से जुड़े मामले इसमें प्रभावी होते हैं।

बूथों में बनाई जा रही टोली

कोरबा। भाजपा नगर मंडल के द्वारा सभी बूथों में अलग-अलग टोली बनाई जा रही है। जिसके लिए मंडल अध्यक्ष लगातार प्रयास कर रहे हैं। अधिकांश मंडलों में आधे से अधिक टोली बन चुकी है। संगठन को मजबूत करने के लिए युवाओं, महिलाओं, कीर्तन मंडली, लाभार्थी, मन की बात सहित अन्य विषयों को लेकर टोली बनाई जा रही है। इस संबंध में मंडल अध्यक्ष अभिषेक गर्ग, ओमप्रकाश साहू, रामबाबू गभेल, बृजलाल राठिया, मनीष मिश्रा, योगेश मिश्रा, राजेश राठौर, डिलेंद्र यादव, उदय शर्मा, दिनेश राठौर का कहना है कि मंडलों में बूथ में टोली तैयार करने के लिए लगातार प्रयास किए जा रहे हैं। इसके लिए प्रतिनिधियों से भी चर्चा की जा रही है। आने वाले दिनों में शेष बूथों में टोली तैयार कर ली जाएगी।

आंदोलन के लिए किया जा रहा तैयार

कोरबा। बिजली कर्मचारी संघ परामर्शदात्रि समिति की बैठक में निर्णय लिया गया कि मुख्यालय में होने वाले प्रदर्शन के लिए सभी जिलों से कार्यकर्ताओं को लाया जाएगा। इसके लिए अलग-अलग लोगों को जिम्मेदारी दी गई है। बिजली कर्मचारी संघ के आर.एस. जायसवाल व नवरतन बरेठ अंबिकापुर जाकर कार्यकर्ताओं की बैठक लेंगे। वहीं प्रदेश कार्यकारी अध्यक्ष संजय तिवारी कोरबा आकर रणनीति तैयार करेंगे। लंबित मांगों को लेकर बिजली कर्मचारी संघ के द्वारा काफी दिनों से आंदोलन किया जा रहा है। इकाई स्तर पर आंदोलन होने के बाद मुख्यालय में भी आंदोलन हुआ था। लेकिन अभी तक उनकी मांगों को पूरा नहीं किया गया है। अब पुन: मुख्यालय में आंदोलन करने की तैयारी की जा रही है। जिसके लिए सभी जिलों में जागरूकता अभियान चलाकर बिजली कर्मचारियों को तैयार किया जाएगा।

अराजक तत्वों से परेशानी

कोरबा। रामपुर क्षेत्र के सार्वजनिक तालाब के नजदीक स्थित सामुदायिक भवन को अराजक तत्वों ने अपने लिए सुरक्षित अड्डा बना लिया है। शाम ढलने के साथ उनकी उपस्थिति यहां होती है। शराब और गांजा के चक्कर में आसपास का माहौल खराब हो रहा है।

कटनी लाईन पर चलाएं सीधी ट्रेन, होगी सुविधा

कोरबा। औद्योगिक जिले कोरबा के स्टेशन को मॉडल केटेगिरी में शामिल कर लिया गया है और अब यहां करोड़ों के विकास कार्य कराये जा रहे हैं। कोशिश यह है कि हर किसी को स्टेशन आकर्षित करे और उनके माध्यम से इसकी ब्रांडिंग हो। इन सबसे अलग जरूरत महसूस की जा रही है कि कोरबा से कटनी की दिशा में सीधी ट्रेन चलायी जाए। कारण यह है कि इसके आभाव में यात्रियों को आगे की यात्रा करने के लिए काफी रूपए खर्च करने पड़ रहे हैं।

दक्षिण पूर्व मध्य रेलवे द्वारा कोरबा से अमृतसर, विशाखापट्नम, त्रिवेंदरम और बेंगलोर के लिए सीधी गाड़ियां चलायी जा रही है जो उत्तर और दक्षिण को जोड़ती हैं। लंबे समय के बाद भी कटनी की दिशा में कोई सीधी ट्रेन कोरबा से नहीं चलायी जा रही है। ऐसे में कोरबा जिले के नागरिकों को संबंधित दिशा में यात्रा के लिए बिलासपुर तक जाने के बाद उसलापुर जाने 100 से 200 रूपए प्रति इकाई खर्च करने पड़ रहे हैं, जबकि कोरबा से बिलासपुर के लिए वे एक चौथाई राशि ही खर्च करते हैं। लोगों की मांग है कि सभी प्रकार के विकास कार्यों और यात्री सुविधाओं में बढ़ोतरी के बीच कटनी, प्रयागराज, वाराणसी के रास्ते पर सीधी कनेक्टिी कोरबा से होना चाहिए। ऐसा होने पर लोगों के रूपए और समय भी बचेंगे। रेल संघर्ष समिति कोरबा के संरक्षक रामकिशन अग्रवाल ने बताया कि लंबे समय से इस बारे में रेलवे जोन और मंत्रालय से पत्राचार किया जा रहा है।

फ्लावरिंग के लिए दी जा रही सलाह

कोरबा। ठंड के मौसम में मुख्य रूप से यह देखने को आ रहा है कि विभिन्न प्रकार के फूलों के खिलने की मात्रा में गिरावट हुई है। इसके चलते वह वर्ग परेशान है जो फूल उत्पादन में लगा हुआ है। लागत निकालने और लाभ अर्जीत करने के मामले में समस्याएं है। उद्यानिकी विभाग के सहायक संचालक ने बताया कि इस दौर में प्रकाश संशलेषण और दूसरे कारण से फ्लावरिंग की प्रक्रिया बाधित होती है। ऐसे में दूसरे मौसम की अपेक्षा फूलों का खिलना कम होता है। कई क्षेत्रों से आ रही शिकायतों के मद्देनजर हमने उत्पादकों को हमने सलाह दी है कि वे प्रमाणित कीटनाशक और रसायन का उपयोग करें। इनसे क्षमता की वृद्धि होती है और अच्छे परिणाम सामने आते हैं।

स्वामी भजनानंद सेवा आश्रम और केंदई जलप्रपात क्षेत्र में इन दिनों वनभोज व अध्ययन भ्रमण का सिलसिला जारी है। कोरबा के सामाजिक कार्यकर्ताओं ने इसी कड़ी में यहां पहुंचकर प्रकृति से निकटता कायम की। उन्होंने विभिन्न विषयों पर आश्रम की प्रमुख सुश्री गिरिजेश नंदिनी से बातचीत भी की।

व्रतबंध और सामूहिक विवाह का आयोजन मैहर में

कोरबा। आगामी 15 और 16 जनवरी 2025 को मैहर के त्रिकूट पर्वत स्थित मां शारदा धाम में भव्य व्रतबंध और सामूहिक विवाह समारोह का आयोजन किया जाएगा। इस आयोजन को सफल बनाने के लिए समिति के सदस्य गांव-गांव जाकर विभिन्न तैयारियों को अंतिम रूप दे रहे हैं।

आयोजन समिति के अध्यक्ष सत्य शर्मा ने बताया कि यह सामाजिक महाकुंभ समाज के सभी वर्गों के सहयोग से किया जा रहा है। इस आयोजन में आचार्य ब्राह्मण समाज की भी विशेष भूमिका है। कार्यक्रम का उद्देश्य सामाजिक समरसता को बढ़ावा देना है। 12 वर्षों के अंतराल के बाद प्रयागराज महाकुंभ के पहले यह भव्य धार्मिक आयोजन किया जा रहा है। यह आयोजन देवभूमि मैहर को एक सामाजिक महाकुंभ का स्वरूप प्रदान करेगा। समिति ने आचार्य ब्राह्मण समाज के सभी जनों से अपील की है कि वे इस महायज्ञ में भाग लेकर अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें।

सांस्कृतिक प्रस्तुति के साथ एनएसएस शिविर का समापन

कोरबा। ग्राम कनकी स्थित शा.उ.मा.विद्यानलय में आयोजित सात दिवसीय एनएसएस कैंप का समापन हो गया। समापन मौके पर एनएसएस के जिला संगठक व कार्यक्रम अधिकारी वाई के तिवारी मुख्य रुप से मौजूद रहे। आयोजन के दौरान मुख्य अतिथियों ने शिविर के मुख्य थीम मेरा युवा भारत के लिए युवा एवं डिजिटल साक्षरता के लिए युवा पर प्रकाश डाला। उन्होंने आयोजन के संबंध में विस्तार से जानकारी दी और शिविर के महत्व को सबके साथ साझा किया। शिविर समापन के दौरान छात्राओं के द्वारा आकर्षक रंगारंग कार्यक्रमों की प्रस्तुती दी गई।

आवश्यकता है
फार्च्यूनर गाड़ी हेतु ड्राइवर की आवश्यकता है।
-:संपर्क करें :-
मो.-8889100009
8889200009

स्वामी कौशल किशोर मिश्र की ओर से प्रकाशक, मुद्रक सुभाष अग्रवाल द्वारा आकाश आफसेट प्रिंटर्स से मुद्रित कर तिलक मार्ग, ट्रासंपोर्ट नगर, कोरबा से प्रकाशित, संपादक सुभाष अग्रवाल फोन: 221149, मो. : 9425224167 आर.एन.आई. पंजी. नं. 50254/89, ई-मेल tarunpresskrb@gmail.com